



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)  
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राप्तिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 312]  
No. 312]

नई विल्सन, शनिवार, अक्टूबर 28, 1978/कार्तिक 6, 1900  
NEW DELHI, SATURDAY, OCTOBER 28, 1978/KARTIKA 6, 1900

इस भाग में चिन्ह पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।  
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

देवदीपीलालम, राजापत्र और उद्दरक मंचालय

(पैट्रोलियम विकास)

प्रधिकारिता

नई विल्सन, 28 अक्टूबर, 1978

सां. का० नि० 512(घ) :—केंद्रीय सरकार, तेल उद्योग (विकास) अधिनियम, 1974 (1974 का 47) की धारा 31 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, विस्तरित नियम बनाती है, भर्ती:—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ :—(1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम तेल उद्योग विकास बोर्ड (केंद्रीय शक्तियों की अंशवादी भविष्य निधि) नियम, 1978 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रभूत होंगे।

2. परिभावाएँ :—इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा घोषित न हो,—

(क) 'बोर्ड' से भविष्यत है तेल उद्योग (विकास) अधिनियम, 1974 (1974 का 47) की धारा 3 के प्रवीन गठित तेल उद्योग विकास बोर्ड;

(ख) "भविष्य" से भविष्यत बोर्ड का भविष्य;

(ग) "मुख्य सेक्षण अधिकारी" से भविष्यत है तेल उद्योग विकास बोर्ड का वित्तीय सलाहकार और मुख्य सेक्षण अधिकारी;

(घ) "बालक" से भविष्यत है अमंज बालक, और इसके अन्तर्गत, जहां अभिवाता को लागू स्वीय विधि द्वारा वहक ग्रहण को मान्यता प्राप्त है वहां, वहक बालक भी है;

(ङ) "उपलक्षित" से वेतन, छुट्टी क, वेतन, प्रथम बोर्ड द्वारा समय समय पर भवधारित रीति से दिया, या जीवन निवाह अमुवान, यदि कोई हो, भविष्यत है, और इसके अन्तर्गत वेतन, छुट्टी के वेतन, या जीवन निवाह अमुवान, के यदि अनुज्ञय है तो, उपयुक्त महं ई वेतन भी है,

(च) "कमंचारी" से बोर्ड द्वारा सीधे भर्ती किया गया व्यक्ति अवधार ऐसा व्यक्ति भविष्यत है जो केंद्रीय सरकार के प्राधीन सेवा से त्यागपत्र देने के बाद, विस व्यवधान के, लोकहित में, बोर्ड के कमंचारी के रूप में प्राप्तिकार किया गया हो;

(छ) 'कुटुम्ब' से विस्तरित भविष्यत है,—

(i) पुरुष अभिवाता की वधा में, अभिवाता की पत्नी या पत्निया और बालक, तथा अभिवाता के किसी मृतक पुत्र की विषय। या विषयाएँ और बालक,

परन्तु यदि अभिवाता यह साक्षित कर देता है कि उसकी पत्नी उससे न्यायिक रूप से पुत्र हो गई है, अथवा वह उस समुदाय की, जिसकी कि वह है, रुढ़िक विधि के अन्तीम उससे भरणपोषण प्राप्त करने की अन्यथा हुक्मार महीं रह गई है तो, आगे से यह समझा जाएगा कि वह उन मामलों में, जिनका संबंध इन नियमों से है, अभिवाता के कुटुम्ब की

सदस्य नहीं रह गई है, जब तक कि अभिदाता ने सचिव को लिखित रूप में बाद में यह सूचना न दी हो कि उसे बराबर इसी रूप में भासा जाता रहेगा,

(ii) स्त्री अभिदाता की बात में, अभिदाता का पति और बालक, तथा अभिदाता के किसी मृतक पुत्र की विधवा या विधवाएं और बालक,

परन्तु यदि कोई अभिदाता सचिव को लिखित रूप में सूचना देकर अपने पति को अपने कुटुम्ब से अपवृत्ति कर देने की अपनी इच्छा व्यक्त करती है तो आगे से यह समझा जाएगा कि वह पति उन भासलों में, जिनका संबंध इन नियमों से है, अभिदाता के कुटुम्ब का सदस्य नहीं रह गया है, जब तक कि अभिदाता बात में लिखित रूप में यह सूचना रह न कर दे,

(ज) 'निधि' से तेल उद्योग विकास बोर्ड कर्मचारी अंशदायी भविष्य निधि आंभिप्रेत है,

(झ) 'छुट्टी' से बोर्ड द्वारा मास्य किसी भी प्रकार की छुट्टी अभिप्रेत है;

(ঁ) 'सचिव' से बोर्ड का सचिव अभिप्रेत है;

(ঁঁ) 'अभिदाता' से निधि का सदस्य अभिप्रेत है;

(ঁঁঁ) 'वर्ष' से वित्तीय वर्ष अभिप्रेत है;

(ঁঁঁঁ) ऐसे शब्दों और पर्वों के, जो इन नियमों में प्रयुक्त हुए हैं और परिभाषित नहीं हैं किन्तु भविष्य निधि अधिनियम, 1925 (1925 का 19) में परिभाषित हैं, वही वर्ष होंगे जो उन्हें क्रमशः गोलिक नियमों में दिए गए हैं,

(ঁঁঁঁঁ) ऐसे शब्दों और पदों से, जो यहाँ प्रयुक्त हुए हैं और इन नियमों अथवा भविष्य निधि अधिनियम, 1925 (1925 का 19) में परिभाषित नहीं हैं, वही वर्ष होंगे जो उन्हें क्रमशः गोलिक नियमों में दिए गए हैं।

3. निधि का गठन—(1) निधि रूपर्थों में रखी जाएगी।

(2) इन नियमों के अधीन निधि में सदृश सभी रकमें डाकखाने के या किसी राष्ट्रीयकरण बैंक के बचत-के खाते में, जिसका नाम "तेल उद्योग विकास बोर्ड कर्मचारी अंशदायी भविष्य निधि खाता" होगा और जो न्यासियों के लिए, जो निम्नलिखित होंगे, लेजा अधिकारी द्वारा चालाया जाएगा, जास की जाएगी और बोर्ड की पुस्तकों में इस प्रकार जमा की गई लिखाई जाएगी :—

(i) सचिव, तेल उद्योग विकास बोर्ड, परेन,

(ii) मुख्य लेजा अधिकारी, तेल उद्योग विकास बोर्ड, परेन, और

(iii) सीधे भर्ती किए गए कर्मचारियों का एक प्रतिनिधि, जिसे अध्यक्ष अपने विवेकानुसार, नामनिविष्ट करेगा।

(3) उपनियम (2) के बायण (iii) के अधीन इस प्रकार नाम निविष्ट प्रतिनिधि नामनिवेशन भी तारीख से एक वर्ष से अधिक की ऐसी अवधि के लिए, जो अध्यक्ष द्वारा विनिविष्ट की जाए, न्यासी के रूप में कार्य करेगा।

(4) निधि में की थी अनुबंध रकमें, जो निधि में से बाध्यकर अवधिकासाओं की पूर्ति के लिए सत्काल शावश्यक न हों, ऐसी सरकारी प्रतिमूलियों, सरकार द्वारा प्रत्यामूल प्रतिमूलियों, लघु बचत लिखानों या जमा स्फीमों में अथवा ऐसी अन्य रीति से जमा की जाएगी जो केन्द्रीय सरकार द्वारा विनिविष्ट की जाए।

4. पालना की रूपर्थ—(1) ये नियम ऐसे हर कर्मचारी को लागू होंगे, जिसने उस मास के, जिसमें उसने एक वर्ष की लगातार सेवा पूरी

की थी, बाद वाले मास के प्रारम्भ से बोर्ड के सचिवालय में एक वर्ष की निरन्तर सेवा पूरी कर ली हो।

(2) यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जिसे निधि के फायदे दिए गए हैं, उन फायदों के किए जाने से पूर्व किसी समय किसी सरकारी या अधीकारी अंशदायी भविष्य निधि में अभिदाता रहा तो उसे अंशदायी भविष्य निधि में उसके नाम जमा रकमें (जिनमें ऐसी भविष्य निधि में उसके संबंध में, उसके भूतपूर्व नियोजकों के अंशदाता, यदि कोई हो, भी सम्मिलित है, उन पर व्याज सहित, उन वासाओं में निधि में उसके नाम अन्तरित कर दी जाएगी जहाँ ऐसा कर्मचारी सभी प्रयोजनों के लिए भूतपूर्व नियोजक का कर्मचारी नहीं रह गया है।

5. नामनिवेशन—(1) खाते में शामिल होते समय अभिदाता सचिव के पास एक नामनिवेशन पत्र भेजेगा जिसमें वह रकम संदेय होने से पूर्व उसकी मृत्यु हो जाने की दशा में या उस दशा में जब रकम संदेय हो किस्तु की न गई हो, एक या अधिक व्यक्तियों को यह रकम प्राप्त करने का अधिकार प्रदान करेगा, तो निधि में अभिदाता के नाम जमा हो;

परन्तु नामनिवेशन करते समय अभिदाता का कोई कुटुम्ब हो तो नामनिवेशन उसके कुटुम्ब के सदस्य या सदस्यों से विश्व किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के पक्ष में नहीं किया जाएगा :

परन्तु यह और कि जहाँ किसी अन्य भविष्य निधि में अभिदाता के नाम जमा रकमें निधि को अन्तरित कर दी गई हों वहाँ ऐसी भविष्य निधि के संबंध में किया गया नाम निवेशन, जब तक कि वह इस नियम के प्रनुसार कोई नामनिवेशन नहीं करता। या नहीं करती, इस नियम के प्रनुसार सम्यक् रूप से किय, गया नया नामनिवेशन समझा जाएगा।

(2) यदि कोई अभिदाता उपनियम (1) के अधीन एक से अधिक व्यक्तियों का नामनिवेशन करता है तो वह प्रत्येक नामनिवेशिती को संदेय रकम या अंश उस नामनिवेशन पत्र में इस रीति से विनिविष्ट करेगा कि खाते में किसी भी समय उसके नाम जमा सभी रकम उसके अन्तर्गत प्रा जाए।

(3) प्रत्येक नामनिवेशन प्रथम अनुसूची में दिए गए प्रधानों में से उस एक प्रधान में किया जाएगा जो परिस्थितियों में उपयुक्त हो।

(4) अभिदाता सचिव को लिखित रूप में सूचना भेजकर किसी भी समय नामनिवेशन रह कर सकता है और यदि वह नामनिवेशन इस प्रकार रह कर देता है तो वह ऐसी सूचना के साथ या अलग से ऐसा नया नाम निवेशन भेजेगा जो इस नियम के उपबन्धों के अनुसार किया गया हो।

(5) अभिदाता नामनिवेशन में निम्नलिखितकी व्यवस्था कर सकेगा,—

(ক) किसी विनिविष्ट नामनिवेशिती के संबंध में, यह कि अभिदाता से पहले उसकी मृत्यु हो जाने पर उस नामनिवेशिती को दिया गया अधिकार ऐसे अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों को खाला जाएगा जो नामनिवेशन में विनिविष्ट किए जाएँ :

परन्तु यदि अभिदाता के कुटुम्ब के अन्य सदस्य हैं तो उपर्युक्त अन्य व्यक्ति उसके कुटुम्ब के ही ऐसे अन्य सदस्य होंगे और यह कि यदि अभिदाता इस खण्ड के अधीन एक से अधिक व्यक्तियों को ऐसा अधिकार प्रदान करता है तो वह ऐसे व्यक्तियों में से प्रत्येक को संदेय रकम या अंश ऐसी रीति से विनिविष्ट करेगा कि उसके अन्तर्गत वह सारी रकम आ जाए जो किसी भी समय उसके नाम जमा हो।

(খ) यह कि नामनिवेशन, उसमें विनिविष्ट किसी अकस्मिकता के बाटिट होने पर अविधिमान्य हो जाएगा :

परन्तु यदि नामनिवेशन करते समय अभिदाता का कोई कुटुम्ब नहीं हो तो वह नामनिवेशन में इस बात का उपबन्ध करेगा कि यदि बाद में

उनका कोई कुटुम्ब हो जाता है तो उपयुक्त नामनिर्देशन अविभिमान्य हो जाएगा :

परन्तु यह और कि यदि नामनिर्देशन करते समय अभिवाता का कोई कुटुम्ब का केवल एक ही सदस्य है तो वह नामनिर्देशन में यह व्यवस्था करेगा कि खण्ड (क) के अधीन अनुकरणी नामनिर्देशी को प्रदत्त अधिकार उस दशा में अविभिमान्य सौ जाएगा जब बाद में उसके कुटुम्ब में कोई अन्य सदस्य आ जाता है या आ जाते हैं ।

(6) ऐसे नामनिर्देशी की मृत्यु के तुरन्त बाद, जिसकी मृत्यु की बाबत उपनियम (5) के खण्ड (क) के उपबन्ध के अनुसार नामनिर्देशन में कोई व्यवस्था नहीं की गई है, अब वह ऐसी छोड़ बढ़ना घट जाने पर जिसके कारण उस उपनियम के खण्ड (क) के अनुसरण में किए गए किसी उपबन्ध के आधार पर वह नामनिर्देशन अविभिमान्य हो जाता है, अभिवाता नामनिर्देशन को रद करते हुए सचिव को लिखित रूप में एक सूचना भेजेगा और उसके साथ इस नियम के उपबन्धों के अनुसार एक नया नामनिर्देशन भी भेजेगा ।

(7) अभिवाता द्वारा किया गया प्रत्येक नामनिर्देशन और उसे रद किए जाने की प्रत्येक सूचना उस सीमा तक जिस सीमा तक वह विभिमान्य है, उस तारीख को प्रभावी हो जाएगी जिसको वह सचिव को प्राप्त होती है ।

6. अभिवाता के जाते प्रत्येक अभिवाता के नाम एक जाता खोला जाएगा जिसमें निम्नलिखित विषय जाएंगे—

- (i) उसके अभिवाता,
- (ii) बोर्ड द्वारा नियम 10 के अधीन खाते में किए गए अंशदान,
- (iii) अभिवायों पर व्याज, जैसा कि नियम 11 द्वारा उपबन्धित है,
- (iv) अंशदानों पर व्याज, जैसा कि नियम 11 में उपबन्धित है ।
- (v) खाते में से लिए गए उदाहरण और निकासी गई रकमें ।

7. अभिवाय की शर्तें—(1) प्रत्येक अभिवाता, जब वह इयूटी पर हो तब किन्तु निलम्बन की अवधि के बीचरा नहीं, निधि में प्रतिमास अभिवाय करेगा :

परन्तु निलम्बन की अवधि के पश्चात पुनः स्थापन पर अभिवाता को उस अवधि के लिए अनुकूल अभिवायों के बाकीयों की अधिकतम रकम से प्रतिक्रिया कोई रकम एक मुश्त, या किसी भी वेतन का विकल्प अनुकात किया जाएगा ।

(2) अभिवाता ऐसी छूटी के बीचरा, जिसमें कोई छूटी वेतन न मिलता हो, या जिसका छूटी वेतन आधे वेतन या आधे ग्रीसेट वेतन के बराबर या उससे कम हो, अपने विकल्प वर, अभिवाय नहीं भी कर सकेगा ।

(3) अभिवाता उपनियम (2) में विविध छूटी के दीरान अभिवाय न करते की अपनी इच्छा निम्नलिखित रीति से सूचित करेगा, अर्थात् :

- (क) यदि वह ऐसा अधिकारी है जो अपने वेतन विल स्वयं लिखता है तो, छूटी पर जाने के पश्चात लिखे गए अपने पहले वेतन विल स्वयं लिखता है तो, छूटी पर जाने से पूर्व कार्यालय के प्रब्लेम को लिखित संसूचना भेजकर,
- (ख) यदि वह ऐसा अधिकारी नहीं है जो अपना वेतन विल स्वयं लिखता है तो, छूटी पर जाने से पूर्व कार्यालय के प्रब्लेम को लिखित संसूचना भेजकर,

टिप्पणी :—(i) समय पर सम्यक सूचना भा देने पर यह समझा जाएगा कि उसने अभिवाय करने का अधिन किया है ।

(ii) इस उपनियम के अधीन सूचित अभिवाता का विकल्प अन्तिम होगा ।

(4) वह अभिवाता, जिसने नियम 18 के अधीन अभिवाय की रकम और उस पर व्याज निकाल लिया है, ऐसी निकासी के पश्चात निधि

में तब तक अभिवाय नहीं करेगा जब तक कि वह इयूटी पर वापस न आ जाए ।

8. अभिवाय की दर—(1) अभिवाय की रकम, निम्नलिखित रात के अधिन रहते हुए, स्वयं अभिवाता द्वारा नियत की जाएगी, अर्थात् :—

- (क) इसे पूरे-पूरे स्पष्टों में व्यक्त किया जाएगा,
- (ख) यह इस प्रकार व्यक्त की गई कोई भी रकम हो सकती है जो उसकी उपलब्धियों के 8-1/3 प्रतिशत से कम नहीं होगी और उसकी उपलब्धियों से अधिक नहीं होगी ।

(2) (2) उपनियम (1) के प्रयोगनार्थ, अभिवाता की उपलब्धियाः—

- (क) ऐसे अभिवाता की दशा में, जो पूर्वगामी वर्ष की 31 मार्च की बोर्ड की सेवा में था, वे उपलब्धियों होंगी जिनका वह उस तारीख को हकदार था:

परन्तु—

(i) यदि अभिवाता उक्त तारीख को छूटी पर रहा हो और उसने ऐसी छूटी के दीरान अभिवाय न करने का अधिन किया है, या उक्त तारीख को निलम्बित रहा हो तो, उसकी उपलब्धियों वे उपलब्धियों होंगी जिनके लिए वह इयूटी पर वापस आने के पश्चात के पहले दिन हकदार था,

(ii) यदि अभिवाता उक्त तारीख को भारत से बाहर प्रतिनियुक्त पर था या उक्त तारीख को छूटी पर था और तब से छूटी पर रहा है और उसने ऐसी छूटी के दीरान अभिवाय करने का अधिन किया है तो, उसकी उपलब्धियों वे उपलब्धियों होंगी जिनके लिए वह तब हकदार होता जब वह भारत में इयूटी पर रहता;

(iii) यदि अभिवाता उक्त तारीख के पश्चातवर्ती दिन को प्रथम बार निधि में शामिल हुआ है तो, उसकी उपलब्धियों वे उपलब्धियों होंगी, जिनके लिए वह ऐसी पश्चात वर्ती तारीख को हकदार था;

- (ख) ऐसे अभिवाता की दशा में जो पूर्वगामी वर्ष की 31 मार्च को बोर्ड की सेवा में नहीं था, वे उपलब्धियों होंगी, जिनके लिए वह सेवा के प्रथम दिन हकदार था, प्रथम यदि वह अपनी सेवा के प्रथम दिन के पश्चात पहली बार निधि में शामिल हुआ है तो वे उपलब्धियों होंगी जिनके लिए वह ऐसी पश्चात वर्ती तारीख को हकदार था:

परन्तु यदि अभिवाता की उपलब्धियाः ऐसी हैं जो अंती-बद्धती रहती है तो उनकी गणना ऐसी रीति से की जाएगी जिसका सचिव नियंत्रण है ;

(3) अभिवाता प्रतिशर्य मासिक अभिवाय की रकम निम्निकृत किए जाने की सूचना निम्नलिखित रीति से देगा :

- (क) यदि वह पूर्वगामी वर्ष की 31 मार्च से इयूटी पर था तो, ऐसी कटीती द्वारा जो वह उस मास के अपने वेतन विल में से इस निमित करता है या करवाता है,

(ख) यदि वह पूर्वगामी वर्ष की 31 मार्च को छूटी पर था और उसने ऐसी छूटी के दीरान अभिवाय न करने का अधिन किया था या वह उक्त तारीख को निलम्बित था तो, ऐसी कटीती द्वारा जो वह इयूटी से वापस आने के बाद के अपने प्रथम वेतन विल में से इस निमित करता है या करवाता है,

(ग) यदि वह वर्ष के दौरान प्रथम बार बोर्ड की सेवा में प्राप्त है तो, ऐसी कटौती द्वारा जो वह उस मास के, जिसके दौरान वह निधि में शामिल होता है, अपने बेतन बिल में से इस निमित्त करता है या करवाता है;

(घ) यदि वह पूर्वगामी वर्ष की 31 मार्च को छुट्टी पर था और छुट्टी पर बना रहता है, और उसने ऐसी छुट्टी के दौरान अभिवाय करने का चयन किया है, अधिकारी यदि वह पूर्वगामी वर्ष की 31 मार्च को अन्यत्र सेवा में था, तो, ऐसी कटौती द्वारा जो वह उस मास के अपने बेतन बिल में से इस निमित्त करवाता है,

(ङ) यदि उसकी उपलब्धियां उपनियम (2) के परन्तुक में निर्दिष्ट प्रकार की हैं तो ऐसी रीति से जिसका निदेश समिति दे।

(४) इस प्रकार नियत किया गया अभिवाय वर्ष के दौरान किसी भी समय एक बार बढ़ाया या घटाया जा सकता है:

परन्तु यदि अभिवाय की रकम को इस प्रकार घटाया जाए तो वह उपनियम (1) द्वारा विहित अनुसार से कम नहीं होगी :

परन्तु यह और कि यदि कोई अभिवाय किसी कलेंडर मास के किसी भाग के लिए बिना बेतन या आधे बेतन अधिक अनुसार बेतन की छुट्टी पर है और उसने ऐसी छुट्टी के दौरान अभिवाय न करने का चयन किया है तो संदेश अभिवाय की रकम छुट्टी पर बिताये गए दिनों की संख्या के, जिसमें ऊपर निर्दिष्ट प्रकार की छुट्टी से भिन्न छुट्टी, यदि कोई हो, सम्मिलित है, अनुपात में होगी।

9. अभिवायों की वसूली—(१) जब निधि में से उपलब्धियां ली जाएं तब उन उपलब्धियों मध्ये अभिवायों की तथा लिए गए अभिवाय की वसूल रकम और उनके व्याज की वसूली ऐसी उपलब्धियों में से की जाएगी।

(२) जब उपलब्धियां किसी अन्य स्रोत से ली जायें तब अभिवाय अपनी देव रकमें प्रतिमास मुच्य लेकर अधिकारी को भेजेगा।

10. बोर्ड द्वारा अंशदान—(१) बोर्ड प्रतिवर्ष 31 मार्च से प्रत्येक अभिवाय के खाते में अंशदान करेगा:

परन्तु यदि कोई अभिवाय वर्ष के दौरान सेवा छोड़ देता है या उसकी मृत्यु हो जाती है तो अंशदान पूर्वगामी वर्ष की समाप्ति और यथास्थिति, सेवा छोड़ने या मृत्यु हो जाने के बीच की अधिकारी के लिए उसके खाते में जमा किए जाएंगे :

परन्तु यह और कि ऐसी किसी अधिकारी के लिए, जिसके लिए अभिवाया को नियमों के अधीन निधि में अभिवाय न करने की अनुमति दिल गई है, या वह निधि में अभिवाय नहीं करता है, कोई अंशदान संवेदन नहीं होगा।

(२) अंशदान, यथास्थिति उस वर्ष या अधिकारी के दौरान इन्हीं पर ली गई अभिवाय की उपलब्धियों का ऐसा प्रतिशत होगा जो अंशदानी अधिक्षय नियम (भारत) 1962 के प्रधीन साधारण या विशेष प्रादेश द्वारा विहित किया गया है या किया जाए:

परन्तु यदि अभिवाय रकम मूल से या प्रत्यया, नियम 8 के उपनियम (1) के प्रधीन अभिवाय द्वारा संवेदन अनुसार अभिवाय से कम है और जिनका अभिवाय कम रहा गया है तब और उस पर प्रोद्धुत व्याज अभिवाय द्वारा ऐसे समय के भीतर नहीं दे दिया जाता जो ऐसा उधार, जिसे देने के लिए नियम 12 के उपनियम (3) के अधीन विशेष कारण अपेक्षित हैं, मंजूर करने के लिए सक्षम प्राधिकारी द्वारा विनियमित किया जाए तो, बोर्ड द्वारा संवेदन अंशदान अभिवाय द्वारा वसूलः यी

गई रकम अधिकारी द्वारा सामान्यतः संवेदन रकम के, इनमें से जो भी कम हो, बराबर होगा, जब तक कि बोर्ड किसी विशेष मामले में अन्यथा नियम न दे।

(३) यदि कोई अभिवाय किसी दौरान अभिवाय करने का चयन करता है तो उसकी छुट्टी का बेतन इस नियम के प्रयोजनों के लिए इन्हीं पर ली गई उपलब्धियों समझा जाएगा।

(४) यदि कोई अभिवाय निलम्बन की किसी अधिकारी की वापत अभिवायों के बकायों को देने का चयन करता है तो उपलब्धियों या उपलब्धियों का बहु मास, जो पुस्तकान पर उस अधिकारी के लिए अनुजात किया जाए, इस नियम के प्रयोजन के लिए, इन्हीं पर ली गई उपलब्धियों समझा जाएगा।

(५) संवेदन अंशदान की रकम निकटतम पूरे-पूरे रुपये में (पक्षास ऐसे को अंगाता रुपया दिना जाएगा) कर ली जाएगी।

11. व्याज—(१) बोर्ड निधि में किसी अभिवाया के नाम जमा रकम पर उसके खाते में व्याज ऐसी वर्ष से जमा करेगा, जिसे केन्त्रीय सरकार, सरकारी सेवकों के लिए रद्दे गए साधारण अधिक्षय नियम के अभिवायों पर व्याज का संदाय करने के लिए समय समय पर विहित करे।

(२) यदि विशेष वर्ष के दौरान निधि में हुए संबंधों में से किए गए विनियमों पर बस्तुतः बसूल की गई व्याज की कुल रकम और उसी वर्ष की वापत सभी अभिवायाओं को दी गई व्याज की कुल रकम के बीच कोई अन्तर है तो बाईं उसका अभिवाय करेगा।

(३) व्याज प्रतिवर्ष 31 मार्च से निम्नलिखित रीति से जमा किया जाएगा :

(i) पूर्वगामी वर्ष की 31 मार्च को अभिवाया के नाम जमा रकम में से चालू वर्ष के दौरान निकाली गई रकमों को घटाकर बची रुपये रकम पर बारह मास का व्याज :

(ii) चालू वर्ष के दौरान निकाली गई रकमों पर—चालू वर्ष की पहली अवैल से लेकर उस मास के, जिसमें रकम निकाली गई थी, पूर्ववर्ती मास के अंतिम दिन तक का व्याज;

(iii) पूर्वगामी वर्ष के 31 मार्च के पश्चात अभिवाया के खाते में जमा सभी रकमों पर जमा की तारीख से लेकर चालू वर्ष की 31 मार्च तक का व्याज;

(iv) व्याज की कुल रकम नीकटतम पूरे पूरे रुपये में (पक्षास ऐसे को अंगाता रुपया दिना जाएगी) कर ली जाएगी।

परन्तु यदि किसी अभिवाया के नाम जमा रकम संवेदन हो गई ही तब इस पर व्याज इस उपनियम के अधीन, यथास्थिति चालू वर्ष के आरम्भ से लेकर या जमा की तारीख से लेकर उस तारीख तक की अधिकारी के लिए ही जमा किया जाएगा जिसको अभिवाया के नाम जमा रकम संवेदन होती है।

(५) इस नियम के प्रयोजनों के लिए, जमा की तारीख उस मास का प्रथम दिन समझी जाएगी जो उस मास के ठीक बास आता है जिसमें अभिवाया की उपलब्धियों सी जाती है या वितरित की जाती है;

परन्तु यदि किसी अभिवाया की उपलब्धियों उस मास की जिसमें उनका संबंध है, अंतिम तारीख की समाप्ति के पूर्व नहीं ली गई है और परिणामतः निधि मही उनके अभिवाय की वसूली में विलम्ब होता है तो ऐसे अभिवाय पर व्याज उस मास से संवेदन होगा जिसमें

प्रभिदाता का वेतन या सूटी का वेतन देय हो गया था असे ही वह किसी भी मास में लिया गया हो।

(5) व्याज उस मास के, जिसमें संदाय किया जाता है, टीक पूर्वामी मास की समाप्ति तक, प्रथमा उस मास के पश्चात् जिसमें वह रकम संदेय हो गई थी, उठे मास की समाप्ति तक इनमें से जो भी अवधि कम हो, के लिए उस व्यक्ति को संदेय होगा जिसे ऐसी रकम संवत्सरी जानी है:

परन्तु कोई भी व्याज उस तारीख के बाद की, जिसे सचिव ने उस व्यक्ति को ऐसी तारीख के रूप में सूचित किया है, जिस तारीख को वह नकद संदाय करने के लिए तैयार है, प्रथमा यदि वह बैंक से संदाय करता है तो उस तारीख के बाद की, जिसको उस व्यक्ति के नाम का बैंक द्वारा भेजा जाता है, किसी अवधि के लिए जमा नहीं किया जाएगा।

(6) निधि में के अतिरिक्तों पर किसी प्रभिदाता को शोध्य कोई रकम संदेय हो जाने के बाद उस मास की अवधि से परे एक वर्ष की अवधि तक के व्याज का संदाय सचिव द्वारा, उसके द्वारा व्यक्तिगत रूप से अपना यह समाधान कर लेने के पश्चात् कि संदाय में विलम्ब ऐसी परिस्थितियों में होगा या जो प्रभिदाता के वश के बाहर थी, प्राधिकृत किया जा सकेगा और ऐसी हर वश में जो प्रशासनिक विलम्ब उस मासमें होगा उसके संबंध में पूरी जांच की जाएगी और यदि आवश्यक हुआ तो कार्रवाई की जाएगी।

(7) यदि प्रभिदाता सचिव को यह सूचना देता है कि वह व्याज नहीं लेना चाहता है तो ऐसा व्याज उसके जाते में जमा नहीं किया जाएगा, किन्तु यदि वह बाद में व्याज की मांग करता है तो उसे उस वर्ष की, जिसमें वह भाग करता है, 1 प्रैसल से जमा किया जाएगा।

(8) ऐसी रकमों पर व्याज, जो नियम 17 या नियम 18 के अधीन निधि में प्रभिदाता के नाम फिर से जमा कर दी जाती है, ऐसी वर्षों से, जो इस नियम के उपनियम (2) में विविध हैं और जहाँ तक संभव होगा इस नियम में विविध रीति से, संगति किया जायगा।

12. निष्ठियों में से अधिम:—(1) सचिव, किसी प्रभिदाता को ऐसा उद्घार दिए जाने की, जो पूरे-पूरे रूपों में से और उसके तीन मास के वेतन की रकम से, प्रथमा निधि में उसके नाम जमा प्रभिदायों और उन पर व्याज की आधी रकम से, इनमें से जो भी कम हो, अधिक न हो, निष्ठियों एक या अधिक प्रयोजनों के लिए, मंजूरी दे सकेगा, अर्थात्:—

(क) प्रभिदाता प्रथमा उस पर बस्तुतः आश्रित किसी व्यक्ति की ओर आधी, प्रस्थावस्था या निःशक्तता के संबंध में व्यय (जिनके अन्तर्गत, जहाँ कहीं आवश्यक हो वहाँ, याकां चाहिए) का संदाय करने के लिए;

(ख) प्रभिदाता या उस पर आश्रित किसी व्यक्ति की उठन गिराव के व्ययों की (जिनके अन्तर्गत, जहाँ कहीं आवश्यक हो वहाँ, याकां व्यय भी है), निष्ठियों में पूर्ति के लिए, अर्थात्:—

(1) हाई स्कूल स्तर के पश्चात, यैशिक, तकनीकी, वृत्तिक प्रथमा व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए भारत से आहुर शिक्षा प्राप्त करने के लिए;

(2) हाई स्कूल स्तर के पश्चात, भारत में चिकित्सा संबंधी, हंजीनियरी प्रथमा प्रन्थ सकनीकी या विशिष्ट पाठ्यक्रम के लिए;

परन्तु वह तब कि पाठ्यक्रम तीन वर्ष से कम के लिए न हो:

(ग) प्रास्त्रियति के उपयुक्त मापमान पर ऐसे आधिकर व्ययों का संदाय करने के लिए, जो प्रभिदाता को रुक्किक प्रथा के

अनुसार विचार, प्रत्येषिट प्रथमा प्रन्थ अनुष्ठानों के संबंध में करने पड़े;

(घ) प्रभिदाता द्वारा अपने जासकीय कर्तव्यों का पालन करने में उसके द्वारा किए गए किसी कार्य के लिए उसके विरुद्ध लगाए गए किसी आरोपों के संबंध में अपनी स्थिति को न्यायसंगत ठहराने की दृष्टि से प्रभिदाता द्वारा संस्थित विधि कार्यवाहियों के व्यय की पूर्ति के लिए, ऐसी वश में प्रयिम किसी प्रन्थ बोई स्लोट से उसी प्रयोजन के लिए अनुज्ञय किसी प्रयिम के अतिरिक्त उपलब्ध होता :

परन्तु इन खण्ड के अपनी अधिम ऐसे प्रभिदाता की अनुज्ञय नहीं होगा जो अपने जासकीय कर्तव्यों से असम्बद्ध किसी मामले में या बोई द्वारा उस पर अधिरोपित किसी सेवा की शर्त या शास्ति के संबंध में बोई के विरुद्ध किसी मामले में किसी न्यायालय में विधिक कार्यवाहियों संस्थित करता है;

(इ) जर्वा प्रभिदाता को बोई द्वारा किसी न्यायालय में अधियोजित किया जाए, या जहाँ अभिदाता अपने किसी अधिकारी की बाबत किसी आंच में अपने व्यावाह के लिए, किसी विधि व्यवसायी की नियोजित करता है वहाँ, अपनी प्रतिरक्षा के व्यय की पूर्ति के लिए।

(2) अध्यक्ष किसी भी प्रभिदाता को, किसी प्रथिम के संदाय की भंजूरी विषेष परिस्थितियों में दे सकता है यदि उसका यह समाधान हो जाए कि संबंधित प्रभिदाता की उप-नियम (1) में वर्णित कारणों से भिन्न किसी कारण से अधिम की आवश्यकता है।

(3) अधिम, उप-नियम (1) में दी गई सीमा के प्राप्तिक्य में, प्रथमा उस समय तक, जब तक कि किसी पूर्वतन अधिम की, उस पर व्याज सहित, अन्तिम किष्ट यापन न कर दी जाए, सिवाय विषेष कारणों के, जिन्हें लेखदाता किया जाएगा, मंजूर नहीं किया जायगा:

परन्तु अधिम निधि में प्रभिदाता के नाम स्थि, प्रभिदायों तथा उन पर व्याज की रकम से किसी भी वश में अधिक नहीं होगा।

स्पष्टीकरण 1—इस नियम के प्रयोजन के लिए, वेतन में, जहाँ अनुज्ञय हो वहाँ, महांगाई वेतन भी शामिल है।

स्पष्टीकरण 2—प्रभिदाता की उप-नियम (1) के खण्ड (ख) के प्रधीन प्रत्येक छह मास में एक बार अधिम से की अनुज्ञा रहेगी।

13. अधिम की वसूली:—(1) (क) अधिम प्रभिदाता से उतनी समान मासिक किष्टों में वसूल किया जायेगा जिसनी का विषेष समिक्षा दें। किन्तु ये किसी वारह से कम, यदि प्रभिदाता वैगा करता है तो, और जबौदीस से आधेक, नहीं होगी।

(ख) ऐसे विशेष मामलों में, जहाँ कि अधिम की रकम नियम 12 के उप-नियम (3) के प्रधीन प्रभिदाता के तीन मास के वेतन से अधिक हो जाए वहाँ समिक्षित किष्टों की संख्या जबौदीस से अधिक नियत कर सकता है जिस्तु किसी भी दशा में किष्टों की संख्या छनीम से अधिक नहीं होगी।

(ग) प्रभिदाता इन किष्टों द्वारा विवित किष्टों से कम किष्टों में भी, या से विकल्प पर, अधिम यापन कर सकता है।

(घ) प्रत्येक किष्ट पूरे-पूरे रूपों में होगी और शीत आवश्यक ही तो इस प्रकार को किष्टों को नियत करने के लिए अधिम की रकम की बढ़ाया या घटाया जा सकता है।

(ङ) (क) अधिम की वसूली, प्रभिदाता की वसूली संबंधी नियम 9 में उपबन्धित रीति से की जाएगी और जिस मास में अधिम लिया गया है उससे ठीक अपने मास का वेतन दिए जाने के साथ-साथ आवश्यक हो जाएगा।

(ब) अधिम की वसूली, अभिदाता की सहमति के बिना, उस दशा में नहीं की जाएगी जब कि उसे जीवन निर्वाह अनुकान मिल रहा हो अथवा वह किसी कलेंडर मास में दस दिन या उससे अधिक के लिए छट्टी पर हो और छट्टी की उस अवधि के लिए उसे या तो कोई छट्टी बेतन न मिल रहा हो या, यास्तिथि, आदे और असुल बेतन के ब्रावोर या उससे कम छट्टी बेतन मिल रहा हो।

(ग) सचिव, अभिदाता के लिखित अनुरोध पर, ऐसी किसी अवधि के दौरान, जब उसे मजूर किए गए किसी अधिम के बेतन की वसूली की जा रही हो, किसी अधिम की वसूली को स्थगित कर सकता है।

(3) यदि निधि में से किसी अभिदाता को एक से अधिक बार अधिम लिए गए हैं तो प्रत्येक अधिम, वसूली के प्रयोजन के लिए, अलग-अलग अधिम माना जाएगा।

(4)(क) अधिम का मूलधन पूरी तरह से बापम कर दिए जाने के पश्चात उस पर व्याज मूलधन होने और उसी पूरी-पूरी अदायगी कर दिए जाने के बीच की अवधि के दौरान प्रत्येक मास अथवा उसके भाग के लिए मूलधन के 1/5 प्रतिशत की दर से छाड़ा किया जाएगा।

(ख) व्याज साधारणतया मूलधन की पूरी-पूरी अदायगी के बाद बाले मास में एक ही किश्त में दिया जायेगा किन्तु यदि खण्ड (क) में निश्चिट अवधि बीस मास से अधिक की है तो व्याज अभिदाता की इच्छानुसार दो समान मासिक किश्तों में वसूल किया जा सकेगा और वसूली की पद्धति बही होगी जो उपनियम (2) में दी गई है।

(5) यदि किसी अभिदाता को कोई अधिम दिया गया है और उससे अधिम ले लिया है और तत्पश्चात् अधिम की, उसकी अदायगी से पहले, अनुज्ञात कर दिया जाता है तो, लिया गया सारा अधिम अथवा उसका अतिवेष नियम II में निश्चिट दर से व्याज महिस तत्काल अभिदाता द्वारा निधि में बापम कर दिया जाएगा। और यदि अभिदाता से ली गई रकम और व्याज की अदायगी में कोई अविकरम करता है तो सचिव यह आवेदन करेगा कि उसे अभिदाता की उपलब्धियों में से कटौती करके एक मूल अथवा बारह से अधिक की उत्तरी मासिक किश्तों में, जिसी सचिव द्वारा निश्चिट की जाए, वसूल कर दिया जाएगा।

(6) इस नियम के प्रवीन वसूल की गई रकमें, जब-जब उनकी वसूली की जाए, निधि में अभिदाता के बाते में जमा की जाएगी।

(7) इन नियमों में किसी बात के होने हुए भी, यदि मंजूर करने वाले प्राधिकारी का समाधान हो जाए कि नियम 10 के प्रवीन निधि में से अधिम के रूप में लिए गए धन को उस प्रयोजन से, जिसके लिए धन निकालने की मंजूरी दी नहीं थी, भिन्न किसी प्रयोजन के लिए प्रयोग में लाया गया है तो संबंधित रकम तुरन्त निधि में अभिदाता द्वारा आपस की जाएगी और ऐसा करने में व्यवस्थाम होने पर यह आवेदन दिया जाएगा कि उन्हें अभिदाता की उपलब्धियों में से, भले ही वह छट्टी पर हो, एक मूल कटौती करके वसूल किया जाए।

परन्तु यदि बापम की जाने आसी भुल रकम अभिदाता की मासिक उपलब्धियों के आधे से अधिक है तो वसूली उसकी उपलब्धियों के अद्वा भाग की मासिक किश्तों में तब तक की जासी रेती जब तक अभिदाता द्वारा पूरी रकम प्रदा न कर दे जाए।

स्पष्टीकरण—इस नियम में, ‘उपलब्धियों’ के अन्तर्गत जीवन-निर्वाह अनुधान नहीं है।

14. निधि में से धन की मिकासी—यहाँ विनिश्चिट शर्तों के प्रवीन रहते हुए, सचिव, अभिदाता की बीस वर्ष की रेता पूरी ही जाने के पश्चात्, जिसके अन्तर्गत सेवा भंग की अवधियाँ, यदि कोई हों, भी हैं,

किसी भी समय, अवना अधिकारियों पर अपनी सेवानिवृत्ति की तारीख से पूर्व वसूल के भीतर, किसी भी समय, इनमें से जो पहले पड़े, निधि में अभिदाता के नाम जमा अभिदायों और उन पर व्याज की रकम में से निम्ननियत एक या अधिक प्रयोजनों के लिए धन की निकासी की मंजूरी दे सकता है, अर्थात् :—

(क) अभिदाता के किसी बालक की, जो उस पर वसूल: अधिकत हो उच्च शिक्षा के व्ययों की (जिनके अन्तर्गत, जहाँ कहीं आवश्यक हो वहाँ, याका व्यय भी है), निम्ननियत भागों में, प्रूति के लिए, अर्थात् :—

(1) हाई स्कूल स्तर के पश्चात्, शैक्षिक तकनीकी अध्यात्रा विशिष्ट पाठ्यक्रम के लिए भारत से बाहर शिक्षा प्राप्त करने के लिए;

(2) हाई स्कूल स्तर के पश्चात्, भारत में विकित्सा संबंधी, हासीनियरी, अथवा अन्य तकनीकी या विशिष्ट पाठ्यक्रम के लिए :

परन्तु यह तब जब तक कि पाठ्यक्रम सीन वर्ष से कम के लिए न हो, ।

(ल) अभिदाता के पुत्रों या पुत्रियों के तथा उस पर बातुत: अधिकत किसी अन्य स्तरी नातेदार के विवाह के संबंध में व्यय की पूति के लिए;

(ग) अभिदाता अथवा उस पर वसूल: अधिकत किसी व्यक्ति की बीमारी के संबंध में व्ययों की (जिनके अन्तर्गत जहाँ कहीं आवश्यक हो वहाँ, याका व्यय भी है) पूति के लिए;

(घ) अपने निवास के लिए कोई उपयुक्त मकान बनवाने या प्राप्त करने के लिए, जिसमें जीवन का वाम भी है, अथवा इस प्रयोजन के लिए अभियानिक रूप में लिए गए किसी ज्ञान मद्देह किसी बकाया रकम को बापम करने के लिए, अथवा किसी ऐसे मकान के, जिस पर अभिदाता का वहने से स्वामित्व है या जिसे उसने अर्जित किया है, पुनर्निर्माण के लिए या उसमें परिवर्तन अथवा परिवर्तन करने के लिए;

(इ) मकान के लिए जीवन खरीदने के लिए या इस प्रयोजन के लिए अभियानिक: लिए गए किसी ज्ञान मद्देह बकाया रह गई किसी रकम को बापम करने के लिए;

(ज) खण्ड (ज) के अवीन निकासी गई रकम का उपयोग करके खारीदी गई जीवन पर मकान का निर्माण करने के लिए;

(ज) अभिदाता की सेवानिवृत्ति की तारीख से पूर्व के छह मास के अन्दर कोई कृषि-भूमि अवश्य कोई कारबार परिसर, अथवा दोनों, को प्राप्त करने के लिए।

स्पष्टीकरण—ऐसा अभिदाता, जिसने गृह-निर्माण के प्रयोजनों के लिए अधिम दिए जाने की केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रायोजित किसी स्त्रीम के अधीन कोई अधिम लिया है, या जिसे किसी व्यय मरकारी स्रोत से इस निमित्त कोई सहायता अनुज्ञात की गई है, खण्ड (घ), (ज) और (ज) में विनिश्चिट प्रयोजनों के लिए, उन खण्डों के अवीन, तथा पूर्वीक स्त्रीम के अधीन लिए गए किसी ज्ञान को बापम करने के प्रयोजन के लिए भी, नियम 15 के उपनियम (1) के परन्तुकों में विनिश्चिट सीमा के अधीन रहते हुए, अन्तिम निकासी की मंजूरी के लिए पात्र होगा।

15. धन निकासी की शर्त:—(1)(क) निधि में अभिदाता के नाम जमा रकम में से उसके द्वारा, नियम 14 में विनिश्चिट एक या अधिक प्रयोजनों के लिए, किसी भी एक समय मिकासी गई कोई रकम, निधि में अभिदाता के नाम जमा अभिदाय और उस पर व्याज की रकम के प्राप्त

ते, प्रथवा छह मास के बेतन से, इनमें से जो भी कम हो, साधारणतया अधिक नहीं होगी।

(ख) सचिव, इस सीमा से अधिक, किन्तु निधि में अभिदाता के नाम जमा अभिदायों और उन पर ब्याज की रकम की तीन-चौथाई रकम तक धनराशि निम्नलिखित का सम्बन्धित करते हुए, मंजूर कर सकेगा :—

- (1) अभिदाता की प्राप्तिः,
- (2) वह उद्देश्य, जिसके लिए धन निकाला जा रहा है,
- (3) निधि में अभिदाता के नाम जमा अभिदाय और उन पर ब्याज की रकमः

परन्तु निकाली जाने वाली रकम किसी भी दशा में 1,25,000 ह० या मासिक बेतन के 75 गुना से, इनमें से जो भी कम हो, अधिक नहीं होगी :

परन्तु यह और कि ऐसे अभिदाता की वशा में, जिसने गृह निर्माण के प्रयोजनार्थ अधिम दिए जाने की केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रायोजित किसी स्कीम के अधीन कोई अधिम लिया है या जिसे किसी अन्य सरकारी स्रोत से इस निमित्त कोई सहायता प्राप्त की गई है, इस उपनियम के अधीन निकाली गई रकम, पूर्वोक्त स्कीम के अधीन लिए गए अधिम की रकम प्रथवा किसी अन्य सरकारी स्रोत से ली गई सहायता की रकम सहित, 1,25,000 रुपये या मासिक बेतन के 75 गुना से, इनमें से जो भी कम हो, अधिक नहीं होगी।

**स्पष्टीकरण 1—अभिदाता को नियम 14 के खण्ड (क) के अधीन छह मास में एक बार धन निकाली की अनुज्ञा रहेगी और ऐसी प्रत्येक निकाली को नियम 14 के प्रयोजनों के लिए अलग प्रयोजन के लिए निकाली माना जाएगा।**

**स्पष्टीकरण 2—उम दशाओं में, जिनमें अभिदाता को खारीदी गई किसी जमीन या मकान के लिए प्रथवा किसी गृह निर्माण सहकारी सोसाइटी प्रथवा वैश्व री किसी अभिकरण की भार्फत् निमित्त किसी मकान के लिए किसी में संदाच करना पड़ता है, उसे जब कभी उससे किसी किशत के संदाय की अपेक्षा की जाए तब धन निकालने की अनुज्ञा रहेगी और ऐसा प्रत्येक संदाय नियम 14 के प्रयोजनों के लिए अलग प्रयोजन के लिए संदाय समझा जाएगा।**

(2) ऐसा अभिदाता, जिसे नियम 14 के अधीन विविध में से धन निकाली की अनुज्ञा दी गई है, युक्तिपूर्क प्रबंध के भीतर, जो सचिव द्वारा विनियिष्ट की जाए, सचिव का यह समाधान करेगा कि जिस प्रयोजन के लिए धन निकाला गया था उसका उसी प्रयोजन के लिए उपयोग किया गया है, और यदि वह ऐसा करने में असफल रहता है तो, इस प्रकार निकाला गया सारा धन या उसका वह भाग, जो उन प्रयोजनों के लिए, जिनके लिए उसे निकाला गया था, उपयोग में नहीं लाया गया है, तुरन्त ही अभिदाता द्वारा नियम 11 में विनियिष्ट वर से उस पर ब्याज सहित निधि में वापस कर दिया जाएगा, और यदि अभिदाता उस रकम को देने में अविकल्प करता है तो सचिव यह आवेदन देगा कि निकाली गई रकम और ब्याज एक मुश्त, प्रथवा ऐसी मासिक किशतों में, जिनका सचिव निवेश दे, अभिदाता की उपलब्धियों में से कटौती करके बसूल सिया जाए।

(3)(क) यदि अभिदाता, जिसे निधि में उसके द्वारा जमा अभिदाय और उस पर ब्याज की रकम में से, नियम 14 के उपनियम (1) के खण्ड (अ), या खण्ड (ख) या खण्ड (च) के अधीन धन निकालने की अनुज्ञा दी गई है, इस प्रकार निकाले गए धन से बनाए गए या प्राप्त किए गए मकान या जमीन का कब्जा, विक्रय, (सचिव को किए गए बंधक से भिन्न) बंधक, बान, शिनिमय द्वारा या अन्य किसी प्रकार से, सचिव की अनुज्ञा के बिना, विलग नहीं करेगा :

परन्तु ऐसी अनुज्ञा निम्नलिखित के लिए अवश्यक नहीं होगी—

- (1) तीन वर्षों से अनधिक की किसी अवधि के लिए पट्टे पर लिए गए किसी मकान या मकान की जमीन के लिए, प्रथवा
- (2) किसी गृह बोर्ड अवधवा राष्ट्रीयकृत बैंक, प्रथवा जीवन बीमा निगम, प्रथवा किसी ऐसे अन्य निगम के पक्ष में, जिस पर केन्द्रीय सरकार का स्वामित्व या नियंत्रण है, और जो नया मकान बनवाने के लिए या विद्यमान मकान में परिवर्तन या परिवर्तन करने के लिए ज्ञान देता है, मन्त्रक रखे जाने के लिए।

(ख) अभिदाता प्रतिवर्ष विसम्बर के 31वें दिन के अनुरूप एक ऐसी घोषणा प्रस्तुत करेगा कि, प्रथवा निगम, मकान या मकान की जमीन यथाऔर्दौक उसके कब्जे में बनी हुई है, या उसे बंधक रखा गया है, या अन्यथा अन्तरित किया गया है, या किराए पर दे दिया गया है और यदि ऐसी अपेक्षा की जाए तो उस निमित्त सचिव द्वारा विनियिष्ट तारीख को या उससे पूर्व सचिव के समक्ष वह विक्रय, बंधक या पट्टे के मूल विलेख और ऐसी बस्तावेजें भी पेश करेगा जिन पर सम्पत्ति के लिए उसका हक आधारित है।

(ग) यदि अपनी सेवा निवृत्ति से पूर्व किसी भी समय, अभिदाता सचिव से पूर्व अनुज्ञा प्राप्त किए बिना मकान या जमीन का कब्जा बिलग कर देता है तो वह निधि में से अपने द्वारा निकाली गई रकम तुरन्त निधि में एक मुश्त ग्रदा करेगा और ऐसी अदायगी में व्यतिक्रम होने पर सचिव, उस मासले में अम्यावेवन करने के लिए अभिदाता को युक्तिपूर्क प्रवसर देने के पश्चात् उक्त रकम को अभिदाता की उपलब्धियों में से, या तो एकमुश्त या उतनी किसीं में बसूल करका लेगा जितनी सचिव द्वारा अवधारित की जाए।

**स्पष्टीकरण—ऐसे अभिदाता से, जिसने सरकार से अूण लिया है और उसके बबले मकान या जमीन सरकार को बंधक रख दी है, निम्नलिखित आशय की घोषणा प्रस्तुत करने की अपेक्षा की जाएगी, अर्थात्—**

“मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि वह मकान या जमीन, जिसके निमित्त के लिए या जिसे प्राप्त करने के लिए मैंने अवधि निधि में से अविकल्प निकाली प्राप्त की है, मेरे कब्जे में बनी हुई है किन्तु सरकार को बंधक है।”

16. किसी अधिम का निकाली में संपर्कर्तन :— (1) कोई भी अभिदाता, जिसने नियम 12 के उपनियम (1) के खण्ड (क), (ख) या (ग) में विनियिष्ट किन्हीं भी प्रयोजनों के लिए उक्त नियम के अधीन कोई अधिम लिया है या अविष्य में ले, सचिव को संबोधित अपने लिखित अनुरोध द्वारा, उस अधिम के संबंध में अपना बकाया अतिरिक्त अतिरिक्त निकाली में संपर्कर्तन कर सकेगा यदि वह प्रयोजन, जिसके लिए अधिम मंजूर किया गया था, ऐसा प्रयोजन है जिसके लिए नियम 14 के अधीन निकाली की जा सकती है और अधिम नियम 14 और नियम 15 में विनियिष्ट अन्य शर्तों की पूर्ति करता है।

(2) इस नियम के प्रयोजनों के लिए, उस रकम की संगणना करने में, जिसे अभिदाता द्वारा निकालने की अनुज्ञा नियम 15 के उपनियम (1) के अधीन दी जा सकती है, संपर्कर्तन के समय खाले में अभिदाता के नाम जमा अभिदाय की रकम, उस पर ब्याज सहित, तथा उधार की बकाया रकम का योग उसके बारे नाम जमा अभिदाय का अतिरिक्त और ब्याज समझा जाएगा और प्रत्येक निकाली को एक अलग निकाली माना जाएगा और एक से अधिक संपर्कर्तनों की वशा में यही सिद्धांत लागू होगा।

17. निधि में के संबंधों की अंतिम निकायी :—जब कोई अभिवाता सेवा छोड़ देता है तब निधि में उसके नाम जमा रखें, नियम 20 के प्रधीन किसी कटौती के प्रधीन रहते हुए, उसे संवेद्य हो जाएगी :

परन्तु ऐसा अभिवाता, जिसे सेवा से पवर्ष्यत कर दिया गया है और बाद में उसे सेवा में पुनःस्पापित कर दिया जाता है, यदि बोर्ड उससे बैसा करने की अपेक्षा करे तो, इस नियम के अनुसार उसे वी गई कोई भी रकम, नियम 11 में विनिर्दिष्ट दर से उस पर व्याज सहित, नियम 18 के परन्तु में उपबंधित रीत से वापस कर देगा। इस प्रकार वापस वी गई रकम निधि में उसके लाते में जमा की जाएगी, और वह भाग जो उसके अभिवातों और उन पर व्याज का शोतक है, और वह भाग जो बोर्ड के अंशदान का, उस पर व्याज सहित, शोतक है नियम 6 में उपबंधित रीत से लेखे में लिया जाएगा।

स्पष्टीकरण 1—ऐसे अभिवाता के बारे में, जिसे अस्वीकृत छोटी मंजूर की गई है यह समझा जाएगा कि उसने प्रतिवार्षीय सेवा निवृत्ति की तारीख से या सेवा छोड़ जाने की अवधि की समाप्ति से सेवा छोड़ दी है।

स्पष्टीकरण 2—ऐसे अभिवाता के बारे में, जो संविदा पर नियक किए गए व्यक्ति से या ऐसे व्यक्ति से भिन्न हो जिसे सेवा से निवृत्त होने के पश्चात् सेवा में अवधान सहित या रहित, पुनःनियोजित कर दिया गया है, यह नहीं समझा जाएगा कि उसने सेवा छोड़ दी है यदि उसे सेवा में अवधान के बिना राज्य सरकार के प्रधीन किसी नए पद पर या केन्द्रीय सरकार के किसी अन्य विभाग में (जहाँ उसे दूसरे विधिय निधि नियम लागू होते हों) प्रपने पहले के पद के साथ कोई संबंध बनाए रखे बिना अन्तरित कर दिया जाता है। ऐसे किसी मामले में उसका अभिवाय तथा बोर्ड का अंशदान, उस पर व्याज सहित,—

(क) किसी अन्य निधि में के उसके लाते में उस निधि के नियमों के अनुसार अस्तरित कर दिया जाएगा, यदि नया पद केन्द्रीय सरकार के किसी अन्य विभाग में हो; अथवा

(ख) संबंधित राज्य सरकार के प्रधीन किसी नए लाते में अन्तरित कर दिया जाएगा, यदि नया पद राज्य सरकार के प्रधीन द्वा और वह राज्य सरकार उसके अभिवातों, बोर्ड के अंशदान और व्याज के ऐसे अन्तरण के लिए, साधारण या विशेष आवेदन द्वारा, सहमत हो।

स्पष्टीकरण 3—अस्तरण के संबंध में यह समझा जाना चाहिए कि उसके अन्तर्गत सेवा से पवर्ष्यत के ऐसे मामले भी हैं जब परवाया बिना किसी अवधान के और बोर्ड की समुचित अनुज्ञा से, केन्द्रीय सरकार के किसी अन्य विभाग में या राज्य सरकार के प्रधीन कोई नियुक्ति प्राप्त करने के लिए किया जाए। ऐसी विधाओं में, जिनमें सेवा में कोई अवधान प्राप्त होता है, यह अवधान उस कार्यप्रणाली अवधि तक ही सीमित रहता चाहिए जिसकी अनुज्ञा किसी विभिन्न स्टेशन को अस्तरण की दण में रहती है। यही बात छठनी के उन मामलों को भी लागू होती, जिनमें छठनी के दुरन्त बाद कोई नियोजन, उसी सरकार के प्रधीन अथवा किसी अन्य सरकार के प्रधीन, से लिया जाता है।

स्पष्टीकरण 4—(क) जब कोई अभिवाता, जो संविदा पर नियम किए गए व्यक्ति से या ऐसे व्यक्ति से भिन्न हो, जिसे सेवा से निवृत्त होने के पश्चात् सेवा को पुनःनियोजित किया गया है, किसी अन्य नियमित निकाय के प्रधीन, जिस पर सरकार का स्वामित्व या नियन्त्रण हो, या सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1860 के प्रधीन रजिस्ट्रीकृत किसी स्वायत्तशासी संगठन के प्रधीन सेवा में बिना अवधान के अन्तरित कर दिया जाता है, तब अभिवातों की रकम और बोर्ड का अंशदान, उस पर व्याज सहित, उसे संबंध नहीं किया

जाएगा, किन्तु उस निकाय की सहमति से, उस निकाय के प्रधीन उसके नए विधिय निधि लाते में अस्तरित कर दिया जाएगा।

(ख) अन्तरण के अन्तर्गत, सेवा से पवर्ष्यत के ऐसे मामले भी हैं, जहाँ पद-त्वाया, बिना किसी अवधान के और बोर्ड की समुचित अनुज्ञा से, किसी ऐसे अन्य नियमित निकाय के प्रधीन, जिस पर सरकार का स्वामित्व या नियन्त्रण हो, अथवा सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1860 (1860 का 21) के प्रधीन रजिस्ट्रीकृत किसी स्वायत्तशासी संगठन के प्रधीन नियुक्ति प्राप्त करने के लिए किया जाए। नए पद पर कार्यप्रणाली करने में लगा हुआ समय उस व्याज में सेवा में अवधान नहीं समझा जाएगा जब वह एक पद से किसी अन्य पद पर हुए अन्तरण पर सरकारी नियमों के प्रधीन अनुज्ञय कार्यप्रणाली समिति से प्राप्त न हो।

18. अभिवाता की सेवा-निवृत्ति :—जब कोई अभिवाता—

(क) निवृत्ति पूर्व छुट्टी पर चला गया है; अथवा

(ख) छुट्टी पर रहते हुए सेवा निवृत्त होने के लिए अनुज्ञात कर दिया गया है, अथवा जिसे सभाय विकित्सा प्राधिकारी ने अंगे की सेवा के लिए अप्रयोग घोषित कर दिया है,

तरु निधि में उसके नाम जमा अभिवातों की रकम और उस पर व्याज, समिति की उस नियमित उसके द्वारा किए गए आवेदन पर, अभिवाता की संदेय हो जाएगा :

परन्तु यदि अभिवाता छुट्टी से वापस आ जाता है तो वह, यदि समिति बेसा करने की अपेक्षा करे तो, अपने लाते में जमा किए जाने के लिए, वह आरी रकम या उसका भाग, जो उसे इस नियम के अनुसार निधि में से दिया गया है, नियम 11 में उपबंधित दर से उस पर व्याज सहित, नकद या प्रतिभूतियों में, अथवा अंगातः नकद या प्रतिभूतियों में, किश्तों में अथवा उसकी उपलब्धियों में से अन्यथा यमूल करके या अन्य प्रकार से, जैसा भी समिति निवेदन दे, निधि में वापस करेगा।

19. अभिवाता की मृत्यु पर प्रतिक्रिया :— नियम 20 के प्रधीन किसी कटौती के प्रधीन रहते हुए, अभिवाता के नाम जमा रकम के संबंध में जो जाने से पूर्व, अथवा यदि रकम संबंध हो गई है तो संबोध कर दिए जाने से पूर्व, उसकी मृत्यु हो जाने पर :—

(i) जब अभिवाता कोई कुटुम्ब छोड़ता है तब—

(क) यदि उसके कुटुम्ब के किसी सदस्य या किसी सदस्यों के पक्ष में नियम 5 के उपबंधियों के अनुसार अभिवाता द्वारा किया गया कोई नामनिर्देशन विद्यमान है तो निधि में उसके नाम जमा रकम या उसका वह भाग, जिससे नामनिर्देशन का संबंध है, उसके नामनिर्देशन को नामनिर्देशन में विनियोजित अनुपात में संदेय हो जाएगा;

(ख) यदि अभिवाता के कुटुम्ब के किसी सदस्य या किसी सदस्यों के पक्ष में ऐसा कोई नामनिर्देशन विद्यमान नहीं है, अथवा यदि ऐसे नामनिर्देशन का संबंध निधि में उसके नाम जमा रकम के किसी एक भाग से है तो, अथवा यदि सारी रकम अथवा उसका वह भाग, जिससे नामनिर्देशन का संबंध है, उसके कुटुम्ब के किसी सदस्य या सदस्यों से भिन्न किसी अवधान या व्यक्तियों के नाम में तात्पर्यत किसी नामनिर्देशन के होते हुए भी, उसके कुटुम्ब के सदस्यों में वरावर-वरावर अंशों में संदेय हो जाएगा;

परन्तु कोई भी अंश निम्नसिद्धि को संदेय नहीं होगा :—

(i) वे अंश, जिन्होंने वयस्कता प्राप्त कर ली है;

(ii) मृतक पुरुष के पुत्र, जिन्होंने वयस्कता प्राप्त कर ली है;

(iii) विवाहित पुत्रियां, जिनके पति जीवित हैं,  
 (iv) मृतक पुत्र की विवाहित पुत्रियां, जिनके पति जीवित हैं,

यदि उसके कृदृश्म का खण्ड (i), (ii), (iii), और (iv) में विनिर्दिष्ट सरलताओं से भिन्न कोई सदस्य विद्यमान हो:

परन्तु यह और कि मृतक पुत्र की विधवा या विधवाएं और आलक या आलकाण अपने मध्य प्रक्रिया वही शैश, बगवार बगवार भागों में, प्राप्त करेंगे जो अंत उस पुत्र ने तब प्राप्त किया हुआ। जब यह अधिनियम का उत्तर-जोशी रहा हो और उसे प्रयत्न परन्तुक के खण्ड (i) के उपबन्धों से छुट भिली होती।

टिप्पणी : (i) किसी अभिवाता के कृदृश्म के किसी सदस्य को इन नियमों के अधीन सदैय कोई भी रकम भविष्य निषि अधिनियम, 1925 (1925 का 19) की धारा 3 को उपधारा (2) के अधीन उस सदस्य में निहित हो जाएगी।  
 (ii) जब अभिवाता कोई भी कृदृश्म नहीं छोड़ता है तब यदि नियम 5 के उपबन्धों के अनुसार उसके द्वारा किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के पक्ष में कोई नामनिर्देशन किया गया है तो, निषि में उसके नाम जमा रकम या उसका वह भाग, जिससे नामनिर्देशन का संबंध है, नामनिर्देशन में विनिर्दिष्ट अनुपात में उसके नामनिर्देशियों या नामनिर्देशियों को सदैय हो जाएगा।

स्पष्टीकरण 1—यदि नामनिर्देशियों भविष्य निषि अधिनियम, 1925 (1925 का 19) की धारा 2 के खण्ड (ग) में यथापरिभाषित किसी अभिवाता पर अधिकृत है तो रकम उस अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (2) के अधीन ऐसे नामनिर्देशियों में निहित हो जाएगा।

स्पष्टीकरण 2—यदि अभिवाता कोई कृदृश्म नहीं छोड़ता है और नियम 5 के उपबन्धों के अनुसार उसके द्वारा किया गया कोई नामनिर्देशन भी विद्यमान नहीं है, अब्याय यदि ऐसे नामनिर्देशन का संबंध निषि में उसके नाम जमा रकम के केवल एक भाग से है तो वह व्यक्ति निषि अधिनियम, 1925 (1925 का 19) की धारा 4 का उपधारा (1) के खण्ड (ख) और खण्ड (ग) के उपबन्ध (ii) के सुरक्षित उपबन्ध सारी रकम को या उसके नाम जमा को, जिससे नामनिर्देशन का संबंध नहीं है, लागू होगे।

20. कटौतियों : इन शर्तों के अधीन रहते हुए कि ऐसी कोई भी कटौती नहीं ही जाएगी जिससे कि निषि में अभिवाता का नाम जमा रकम के उस निषियों से संदाय किए जाने से पूर्व उसमें नियम 10 और नियम 11 के अधीन जमा बोर्ड के अंशदान और उस पर व्याज की रकम से अधिक रकम निकल जाए, :—

(क) सचिव यह निर्देश दें सकेगा कि उसमें से कटौती करके बोर्ड को:—  
 (i) उन सभी रकमों का संदाय किया जाए जो ऐसे अंशदान और व्याज की दृगोतक हैं, यदि अभिवाता को अवकाश, विवाह या अभिमता के कारण सेवा से पदचयन किया गया है;

परन्तु यदि सचिव का यह समाधान हो जाता है कि इस प्रकार की कटौती से अभिवाता को बहुत अधिक कटौत होता तो वह, आवेदन द्वारा, ऐसी कटौती में से उस अधिदाय और व्याज की रकम, जो अभिवाता को उस दशा में सदैय होगी जब यह विकितसीय कारणों से सेवानिवृत्त होगा होता, वो तिहाई से अनधिक रकम तक की छुट दें सकेगा:

परन्तु यह और कि यदि पदचयन का ऐसा कोई आवेदन आव में रद्द कर दिया जाए तो इस प्रकार की कटौती रद्द हो जाएगी, ऐसे सवाल में उसके फिर से बहाल हो जाने पर, निषि में उसके नाम फिर से जमा कर दी जाएगी।

(ii) उन सभी रकमों का संदाय किया जाए, जो ऐसे अंशदान और व्याज की दृगोतक हैं, यदि अभिवाता, उस रूप में, अपनी

सेवा के प्रारम्भ के पांच वर्ष के भीतर, सेवा से र्यात्रपत्र देवेता है या मृत्यु या अधिवर्षिता से अथवा सक्षम विकिरण प्राधिकारी द्वारा इस घोषणा से कि वह आगे सेवा करने के अध्यय है, प्रथमा पद उसका विवात कर दिए जाने अथवा स्थापन में कमी कर देने से भिन्न किसी कारण से बोर्ड के अधीन कर्मचारी नहीं रह जाता।

(घ) सचिव यह निर्देश दें सकेगा कि उसमें से कटौती करके बोर्ड को उस रकम का संदाय किया जाए जो अभिवाता द्वारा बोर्ड के प्रति उपगत किसी वायिल के अधीन वेय हुई हो।

स्पष्टीकरण : इस नियम के खण्ड (क) के उपबन्ध (2) के प्रयोगन के लिए :—

(क) पांच वर्ष की अवधि बोर्ड के अधीन अभिवाता की निरन्तर सेवा के प्रारम्भ से गिनी जाएगी।

(ख) केवल राजकार के किसी अन्य विभाग में या राज्य सरकार के अधीन या किसी ऐसे नियमित निकाय के अधीन जो सरकार के स्वायत्त या नियंत्रण में है या सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1860 (1860 का 21) के अधीन रजिस्ट्रीकृत किसी स्वायत्तसाहसी संगठन के अधीन विवाह व्यवस्था के और बोर्ड की सम्बित अनुज्ञा से नियुक्त प्राप्त करने के लिए सेवा से दिया गया तथायगपत्र बोर्ड के अधीन किया गया तथायगपत्र नहीं माना जाएगा।

21. निषि में रकम का संदाय करने की रीति — (1) जब निषि में अभिवाता के नाम जमा कोई रकम अध्यवा नियम 20 के अधीन की गई कटौती के बाद बचा उसका अतिशेष सदैय हो जाए तब सचिव अपना यह समाधान कर सेवे के पश्चात् कि यह उस नियम के अधीन ऐसी कोई कटौती करने का निवेश न दिया गया हो तब कोई भी कटौती नहीं की जानी है, यह कर्तव्य होगा कि वह उपनियम (3) में यथाउपनियत इस नियमित लिखित आवेदन के प्राप्त होने पर संदाय करे।

(2) यदि ऐसा स्पष्टि जिसे इन नियमों के अधीन कोई रकम दी जाती है ऐसा पागल है जिसकी सम्पदा के लिए धारतीय पागलपन अधिनियम 1912 (1912 का 4) के अधीन इस नियम की प्रबन्धक नियुक्त किया गया है तो संदाय ऐसे प्रबन्धक को ही किया जाएगा, न कि पागल को:

परन्तु यदि कोई प्रबन्धक नियुक्त न हो किया गया है और जिस व्यक्ति को रकम सदैय है उसे किसी मजिस्ट्रेट ने पागल प्रधानित किया है तो कलषटर के आदेशों के अधीन सदैय धारतीय पागलपन अधिनियम 1912 (1912 का 4) की धारा 95 की उपधारा (1) के उपबन्धों के अनुसार उस व्यक्ति को किया जाएगा जिसके भारसाधार में ऐसा पागल है, और सचिव पागल के भारसाधार व्यक्ति को उठनी ही रकम का संदाय करेगा जितनी वह ठीक समझे और यदि कोई अधिशेष रह जाएगा तो ऐसा अतिशेष अध्यवा उसका ऐसा आव जिसे वह ठीक समझे पागल के ऐसे सवालों के अध्यापण के लिए दिया जाएगा जो भरण और उस पर आधिकृत है।

(3) कोई व्यक्ति जो इस नियम के अधीन संदाय का आव करता चाहता है उस नियमित सचिव को लिखित आवेदन करेगा;

(ख) निकाली गई रकमों का संदाय केवल भारत में ही किया जाएगा;

(ग) जिन व्यक्तियों को रकम से संदाय हैं, वे भारत में संदाय प्राप्त करने के अपने प्रबन्ध स्थान करेंगे।

स्पष्टीकरण : जब किसी अभिवाता के नाम जमा रकम नियम 17 18 या 19 के अधीन सदैय हो गई ही तब सचिव अभिवाता के नाम जमा रकम के उस आव का तत्काल संदाय करने के लिए प्राधिकृत करेगा जिसके संबंध में कोई विवाह या शका नहीं है और अतिशेष उसके पश्चात् यथासंभव शीघ्र, समायोजित किया जाएगा।

22. अभिवात के संदाय के सम्मुखीन की संख्या का बताया जाना :— उपलब्धियों में से कटौती करके या नक्त अभिवात देते समय अभिवाता निषि

में अपने खाले की वह संख्या बताएगा जो सचिव द्वारा उसे संसूचित की जाएगी और उस संख्या में कोई भी परिवर्तन उसी प्रकार सचिव द्वारा प्रभिवाता को संसूचित किया जाएगा।

### 23. प्रभिवाता को लेखे का वार्षिक विवरण दिया जाना :—

(1) (क) प्रतिवर्ष 31 मार्च के पश्चात् यथासंभव शीघ्र, मुख्य लेखा प्रधिकारी प्रयोक प्रभिवाता की निधि में उसके लेखे का एक विवरण, जिसमें उस वर्ष की पहली अप्रैल को उसका आरम्भिक प्रतिशेष, वर्ष के दौरान जमा की गई या निकाली गई कुल रकम, उस वर्ष की 31 मार्च को जमा किए गए व्याज की कुल रकम और उस तारीख को अन्तिम प्रतिशेष विद्याया जाएगा।

(ख) मुख्य लेखा प्रधिकारी लेखा विवरण में जांच करने पर यह संलग्न करेगा कि प्रभिवाता :—

(i) नियम 5 के अधीन किए गए किसी नामनिर्देशन में कोई परिवर्तन करना चाहता है या नहीं;

(ii) ऐसे किसी मामले में जहां उसने नियम 5 के उपनियम (1) के प्रथम परमुक्त के अधीन अपने कुटुम्ब के किसी सदस्य के पक्ष में कोई नामनिर्देशन नहीं किया है, उसे कोई कुटुम्ब प्राप्त हुआ है या नहीं।

(2) प्रभिवाता वार्षिक विवरण के शुरू होने के बारे में अपना समाधान करेगा और उस विवरण की प्राप्ति की तारीख से तीन मास के भीतर मुख्य लेखा प्रधिकारी के व्यापार में गलतियां लाई जाएंगी।

(3) मुख्य लेखा प्रधिकारी यदि प्रभिवाता द्वारा अपेक्षा भी जाए तो, वर्ष में एक बार, किन्तु एक बार से अधिक नहीं, प्रभिवाता को उस कुल रकम की जानकारी देगा जो उस अन्तिम मास की, जिसके लिए उसका लेखा लिखा जा चुका है समाप्ति पर निधि में उसके माम जमा है।

24. आवेदन का सचिव को सम्मोहित किया जाना :—इन नियमों के अधीन सभी आवेदन सचिव को सम्मोहित किए जाएंगे।

25. व्यष्टिक मामलों में नियमों के उपबन्धों का व्याख्या किया जाना :—जब बोई का यह समाधान हो गया हो कि इन नियमों में से किसी नियम के प्रवर्तन से किसी प्रभिवाता को प्रसम्पक कष्ट हो रहा है या होना संभाष्य है तो बोई इन नियमों में किसी बात के लिए तुए भी उस प्रभिवाता के मामले में ऐसी रीति से कार्रवाई कर सकेगा जो उसे न्यायोनित और साम्यांगी प्रतीत हो।

26. निर्वचन :—यदि इन नियमों के निर्वचन के संबंध में कोई प्रश्न उठता है तो उसे विनियोग के लिए केन्द्रीय सरकार को निर्दिष्ट किया जाएगा और वह उस पर अपना विनियोग देगा।

### प्रथम घन्ताचूडी

[नियम 5(3) देखिए]

नाम निर्देशन के प्रवाप

#### 1. जब प्रभिवाता का कुटुम्ब हो और वह उसके एक सदस्य का नाम निर्वेशन करना चाहता है

मैं, निधि में अपने नाम जमा रकम के संवेद्य होने से पूर्व प्रथमा ऐसी वशा में, जब वह संवेद्य हो चुकी हो किन्तु भी न गई हो, मेरी मृत्यु हो जाने पर, उक्ता रकम प्राप्त करने के लिए नीचे वर्णित व्यक्ति का, जो तेस उद्योग विकास निधि बोई (कर्मचारी धन्यवादी भविष्य निधि) नियम, 1978 के नियम 2 में यथापरिभाषित भेरे कुटुम्ब का सदस्य है, नामनिर्देशन करता हूँ।

नाम निर्देशिती का नाम

और पता

प्रभिवाता के साथ नातेवारी

आयु

ऐसी आकस्मिकताएं जिनके घटने पर नाम निर्देशन प्रविष्टिमान्य हो जाएगा

ऐसे व्यक्ति/व्यक्तियों के, यदि कोई हों नाम, परे और मातेदारी जिन्हें नाम निर्देशिती का प्रविष्टिमान्य हो जाएगा जब उनकी मृत्यु प्रभिवाता से पहले हो जाए

तारीख

197

के

का

दिन

स्थान :

हस्ताक्षर करने वाले दो साक्षी

प्रभिवाता के हस्ताक्षर

1. 2.

2. जब प्रभिवाता का कोई कुटुम्ब हो और वह उसके एक से अधिक सदस्यों का नामनिर्देशन करना चाहता है

मैं, निधि में अपने नाम जमा रकम के संवेद्य होने से पूर्व प्रथमा ऐसी वशा में जब वह संवेद्य हो चुकी हो किन्तु भी न गई हो, मेरी मृत्यु हो जाने पर उक्ता रकम प्राप्त करने के लिए नीचे वर्णित व्यक्तियों को, जो तेस उद्योग विकास निधि बोई (कर्मचारी धन्यवादी भविष्य निधि)

नियम, 1978 के नियम 2 में यथापरिभाषित भेरे कुटुम्ब के संघस्य हैं, नाम निर्देश करता हूँ और यह निर्देश देता हूँ कि उक्त रकम उक्त व्यक्तियों के बीच, नीचे उनके नामों के सामने यी गई रीति से, विवरित की जाएगी:—

नाम निर्वेशिती का प्रभिवाता के साथ नातेवारी नाम और पता	आयु	संघस्यों में अंश की रकम जो ऐसी आकस्मिकताएं जिनके एसे व्यक्ति/व्यक्तियों के, प्रत्येक को बी जानी है घटने पर नाम निर्देशन अधिकार उस दशा में संक्रमित हो जाएगा और नातेवारी जिन्हें नाम निर्वेशिती का अधिकार उस दशा में संक्रमित हो जाएगा जब उनकी मृत्यु प्रभिवाता से पहले हो जाए
--	-----	---

तारीख	197	के	का	दिन
स्थान :	प्रभिवाता के हस्ताक्षर			

हस्ताक्षर करने वाले दो साक्षी

- 1.
- 2.
3. जब प्रभिवाता का कोई कुटुम्ब न हो और वह एक व्यक्ति का नाम निर्देशन करना चाहता हो

मैं, जिसका तेल उच्चोग विकास निधि बोर्ड (कर्मचारी अंशदायी भविष्य निधि) नियम, 1978 के नियम 2 में यथापरिभाषित कोई कुटुम्ब नहीं है, निधि में अपने नाम जमा रकम के संदेय होने से पूर्व अपवा ऐसी दशा में जब वह संदेय हो चुकी है किन्तु यी न गई हो, मेरी मृत्यु ही जाने पर, उक्त रकम प्राप्त करने के लिए नीचे वर्णित व्यक्ति का नाम निर्देशन करता हूँ:

नाम निर्वेशित का नाम और पता	प्रभिवाता के साथ नातेवारी	आयु	ऐसी आकस्मिकताएं जिनके घटने ऐसे व्यक्तियों के, यदि कोई हो, पर नामनिर्देशन अविविमान्य हो नाम, पता और नातेवारी, जिन्हें नामनिर्वेशिती का अधिकार उस दशा में संक्रमित हो जाएगा जब उनकी मृत्यु प्रभिवाता से पहले हो जाए।
-----------------------------	---------------------------	-----	--

तारीख	197	के	का	दिन
स्थान :	प्रभिवाता के हस्ताक्षर			

हस्ताक्षर करने वाले दो साक्षी

- 1.
- 2.
3. जब प्रभिवाता का कोई कुटुम्ब न हो और वह एक से अधिक व्यक्ति का नाम निर्देशन करना चाहता हो

मैं, जिसका तेल उच्चोग विकास निधि बोर्ड (कर्मचारी अंशदायी भविष्य निधि) नियम, 1978 के नियम 2 में यथापरिभाषित कोई कुटुम्ब नहीं है, निधि में अपने नाम, जमा रकम के संदेय होने से पूर्व अपवा ऐसी दशा में जब वह संदेय हो चुकी हो किन्तु यी न गई हो, मेरी मृत्यु हो जाने पर

उक्त रकम प्राप्त करने के लिए नीचे वर्णित व्यक्तियों का नाम निर्देशन करता हूँ और यह निर्देश वेता हूँ कि उक्त रकम उक्त व्यक्तियों के बीच, नीचे उनके नामों के सामने दी गई रीत से, वितरित की जाएगी :

नाम निर्देशिती का नाम	अभिवाता के साथ मातेवारी	आयु	संचयों में ध्रुंश की रकम जो प्रत्येक को दी जानी है	ऐसी आकस्मिकताएं जिनके एसे अभिव्यक्तियों के घटने पर नाम निर्देशन यदि कोई है, नाम, अविविभाग्य हो जाएगा
				पते और मातेवारी जिन्हें नाम निर्देशिती का अधिकार उस दशा में संतुष्टि हो जाएगा जब उनकी मृत्यु अभियासा से पहले हो जाए।

तारीख 197 का विन  
स्थान :

अभिवाता के दृस्तावत

दृस्तावत करने वाले दो साक्षी

1.  
2.

[फा० सं० 7 (13)/78-री० एफ० फ००]  
एस० एल० ओसला संपूर्ण सचिव और वित्तीय सलाहकार

### MINISTRY OF PETROLEUM, CHEMICALS AND FERTILISERS

(Department of Petroleum)

New Delhi, the 28th October, 1978

#### NOTIFICATION

G.S.R.—In exercise of the powers conferred by section 31 of the Oil Industry (Development) Act, 1974 (41 of 1974), the Central Government hereby makes the following rules, namely:—

1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called the Oil Industry Development Board (Employees' Contributory Fund) Rules, 1978.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires,—

(a) "Board" means the Oil Industry Development Board constituted under section 3 of the Oil Industry (Development) Act, 1974 (47 of 1974);

(b) "Chairman" means the Chairman of the Board;

(c) "Chief Accounts Officer" means the Financial Adviser and Chief Accounts Officer of the Oil Industry Development Board;

(d) "Child" means a legitimate child and includes an adopted child, where adoption is recognised by the personal law governing the subscriber;

(e) "emoluments" means pay, leave salary or a subsistence grant, if any, in the manner determined by the Board from time to time and includes dearness pay appropriate to pay, leave salary or subsistence grant, if admissible;

(f) "employee" means a person directly recruited by the Board or a person absorbed as an employee of the Board, without break, after resignation from service under Central Government, in public interest;

(g) "family" means.—(i) in the case of a male subscriber, the wife or wives and children of the subscriber and the widow or widows and children of any deceased son of the subscriber ;

Provided that if a subscriber proves that his wife has been judicially separated from him or has otherwise ceased, under the customary law of the community to which she belongs, to be entitled to maintenance from him, she shall henceforth be deemed to be no longer a member of the subscriber's family in matters to which these rules relate, unless the subscriber subsequently intimates by notice in writing to the Secretary that she shall continue to be so regarded;

(ii) in the case of a female subscriber the husband and children of the subscriber, and the widow or widows and children of any deceased son of the subscriber :

Provided that if a subscriber by notice in writing to the Secretary expresses her desire to exclude her husband from her family, the husband shall henceforth be deemed to be no longer a member of the subscriber's family in matters to which these rules relate, unless the subscriber subsequently cancels such notice in writing;

(h) "Fund" means the Oil Industry Development Board Employees' Contributory Provident Fund;

(i) "leave" means any kind of leave recognised by the Board;

(j) "Secretary" means the Secretary to the Board;

(k) "subscriber" means a member to the Fund;

(l) "year" means a financial year;

(m) words and expressions used in these rules and not defined, but defined in the Provident Funds Act, 1925 (19 of 1925) shall have the meanings respectively assigned to them in that Act ;

(n) words and expressions used herein and not defined whether in these rules or in the Provident Funds Act, 1925 (19 of 1925) shall have the meanings respectively assigned to them in the Fundamental Rules.

3. Constitution of the Fund.—(1) The Fund shall be maintained in rupees.

(2) All sums paid into the Fund under these rules shall be credited, and shall be shown in the books of the Board to be so credited, in a Saving Bank Account with the Post Office or with any of the nationalised banks and named "The Oil Industry Development Board Employees' Contributory Provident

Fund Account" to be operated by the Chief Accounts Officer for the Trustees comprising of the following, namely :—

- (i) the Secretary, Oil Industry Development Board ex-officio;
- (ii) the Chief Accounts Officer Oil Industry Development Board ex-officio; and
- (iii) a representative of the directly recruited staff to be nominated by the Chairman, at his discretion.

(3) a representative so nominated under clause (iii) of sub-rule (2) shall act as Trustee for a period not exceeding one year from the date of nomination as specified by the Chairman.

(4) accretions to the Fund, not immediately required for meeting obligatory payments from the Fund, shall be invested in such Government securities, Government guaranteed securities, Small Savings instruments or deposit schemes or in such other manner as may be specified by the Central Government.

4. Conditions of eligibility.—(1) These rules shall apply to every employee who has completed one year of continuous service in the Secretariat of the Board from the beginning of the month following that in which he completed continuous service of one year.

(2) If an employee admitted to the benefits of the Fund was, at any time prior to his being so admitted to the benefits of the Fund, a subscriber to a Government or semi-Government contributory provident fund, the amounts lying to his credit in the said contributory provident fund (including contributions of his previous employers if any, in relation to him in such provident fund) together with interest thereon, shall be transferred to his credit in the Fund and in such cases the employee shall for all purposes cease to be employee of the previous employer.

5. Nomination.—(1) A subscriber shall, at the time of joining the Fund send to the Secretary a nomination conferring on one or more persons the right to receive the amount that may stand to his credit in the Fund in the event of his death before that amount has become payable, or having become payable, has not been paid :

Provided that if, at the time of making the nomination, the subscriber has a family the nomination shall not be in favour of any person or persons other than a member or members of his family :

Provided further that, where the amount lying to the credit of a subscriber in any other provident fund has been transferred to the Fund, the nomination made by him in respect of such provident fund shall be deemed to be a fresh nomination duly made under this rule until he or she makes a nomination in accordance with this rule.

(2) If a subscriber nominates more than one person under sub-rule (1), he shall specify in the nomination the amount or share payable to each of the nominees in such manner as to cover the whole of the amount that may stand to his credit in the Fund at any time.

(3) Every nomination shall be in such one of the Forms set forth in the First Schedule as is appropriate in the circumstances.

(4) A subscriber may, at any time, cancel a nomination by sending a notice in writing to the Secretary and where a subscriber so cancels a nomination, shall, along with such notice or separately send a fresh nomination made in accordance with the provisions of this rule.

(5) A subscriber may provide in a nomination,—

- (a) in respect of any specified nominee, that in the event of his predeceasing the subscriber, the right conferred upon that nominee shall pass to such other person or persons as may be specified in the nomination :

Provided that such other person or persons shall, if the subscriber has other members of his family, be such other member or members of his family and that where the subscriber confers, such a right on more than one person under this clause, he shall specify, the amount or share payable to each

of such persons in such a manner as to cover the whole of the amount that may stand to his credit at any time;

- (b) that the nomination shall become invalid in the event of the happening of a contingency specified therein;

Provided that if at the time of making the nomination the subscriber has no family, he shall provide in the nomination that it shall become invalid in the event of his subsequently acquiring a family:

Provided further that if at the time of making the nomination the subscriber has only one member of the family he shall provide in the nomination that the right conferred upon the alternate nominee under clause (a) shall become invalid in the event of his subsequently acquiring any other member or members in his family.

(6) Immediately on the death of a nominee in respect of whose death, no provision as provided in clause (a) of sub-rule (5) has been made in the nomination or on the occurrence of any event by reason of which the nomination becomes invalid by virtue of any provision made in pursuance of clause (b) of that sub-rule, the subscriber shall send to the Secretary a notice in writing cancelling the nomination together with a fresh nomination made in accordance with the provisions of this rule.

(7) Every nomination made and every notice of cancellation given by a subscriber shall, to the extent that it is valid, take effect on the date on which it is received by the Secretary.

6. Subscriber's Accounts.—An account shall be opened in the name of each subscriber in which shall be shown :—

- (i) his subscriptions;
- (ii) contributions made under rule 10 by the Board to the account;
- (iii) interest, as provided by rule 11, on subscriptions;
- (iv) interest, as provided by rule 11, on contributions, advances and withdrawals from the Fund.

7. Conditions of Subscriptions.—(1) Every subscriber shall subscribe monthly to the Fund when on duty but not during a period of suspension :

Provided that a subscriber on reinstatement after a period of suspension shall be allowed the option of paying in one lump sum, or in instalments, any sum not exceeding the maximum account of arrears of subscriptions permissible for that period.

(2) A subscriber may at his option not subscribe during leave which either does not carry any leave salary or carries leave salary equal to or less than half pay or half average pay.

(3) The subscriber shall intimate his election not to subscribe during the leave referred to in sub-rule (2), in the following manner namely :—

- (a) if he is an officer who draws his own pay bills by making no deduction on account of subscriptions in his first pay bill drawn after proceeding on leave;
- (b) if he is not an officer who draws his own pay bills, by written communication to the Chief of Accounts Officer before he proceeds on leave.

Note :—(i) Failure to give due and timely intimation shall be deemed to constitute an election to subscribe.

(ii) The option of a subscriber intimated under this sub-rule shall be final.

(4) A subscriber who has, under rule 18, withdrawn the amount of subscriptions and interest thereon, shall not subscribe to the Fund after such withdrawal unless he returns to duty.

8. Rate of Subscriptions.—(1) The amount of subscriptions shall be fixed by the subscriber himself subject to the following conditions, namely :

- (a) it shall be expressed in whole rupees;

(b) it may be any sum, so expressed, not less than 8-1/3 per cent of his emoluments and not more than his emoluments.

(2) For the purpose of sub-rule (1), the emoluments of a subscriber shall be :—

(a) in the case of a subscriber who was in service of the Board on the 31st March of the preceding year, the emoluments to which he was entitled on that date :

Provided that :—

(i) if the subscriber was on leave on the said date and elected not to subscribe during such leave or was under suspension on the said date, his emoluments shall be the emoluments to which he was entitled on the first day after his return to duty;

(ii) if the subscriber was on deputation out of India on the said date or was on leave on the said date and continues to be on leave and has elected to subscribe during such leave, his emoluments shall be emoluments to which he would have been entitled had he been on duty in India ;

(iii) if the subscriber joined the Fund for the first time on a day subsequent to the said date, his emoluments shall be emoluments to which he was entitled on such subsequent date ;

(b) In the case of a subscriber who was not in service of the Board on the 31st March of the preceding year, the emoluments to which he was entitled on the first day of service or if he joined the Fund for the first time on a date subsequent to the first day of his service the emoluments to which he was entitled on such subsequent date :

Provided that, if the emoluments of the subscriber are of a fluctuating nature, they shall be calculated in such manner as the Secretary may direct.

(3) The subscriber shall intimate the fixation of the amount of monthly subscription in each year in the following manner :—

(a) if he was on duty on the 31st March of the preceding year, by the deduction which he makes or causes to be made in this behalf from his pay bill for that month;

(b) if he was on leave on the 31st March of the preceding year and elected not to subscribe during such leave, or was under suspension on that date, by the deduction which he makes or causes to be made in this behalf from his first pay bill after his return to duty;

(c) if he has entered service of the Board for the first time during the year, by the deduction which he makes or causes to be made in this behalf, from his pay bill for the month during which he joins the Fund ;

(d) if he was on leave on the 31st March of the preceding year and continues to be on leave and has elected to subscribe during such leave, or if he was on foreign service on the 31st March of the preceding year, by the deduction which he causes to be made in this behalf from his salary bill for that month ;

(e) if his emoluments are of the nature referred to in the proviso to sub-rule (2) in such manner as the Secretary may direct.

(4) The amount of subscription so fixed may be enhanced or reduced once at any time during the course of a year:

Provided that when the amount of subscription is so reduced it shall not be less than the minimum prescribed by sub-rule (1) :

Provided further that if a subscriber is on leave without pay or leave on half pay or half average pay for part of a

calendar month and he has elected not to subscribe during such leave, the amount of subscription payable shall be proportionate to the number of days spent on duty including leave, if any, other than leave of the nature referred to above.

9. Realisation of Subscriptions : (1) When emoluments are drawn from the Fund, recoveries of subscriptions on account of these emoluments and of the principal and interest of advances shall be made from such emoluments.

(2) When emoluments are drawn from any other source the subscriber shall forward his dues monthly to the Chief Accounts Officer.

10. Contribution by the Board : (1) The Board shall with effect from the 31st March of each year, make a contribution to the account of each subscriber :

Provided that if a subscriber quits the service or dies during a year, contributions shall be credited to his account for the period between the close of the preceding year and the date of quitting of service or death, as the case may be :

Provided further that no contribution shall be payable in respect of any period for which the subscriber is permitted under the rules not to subscribe, or the subscriber does not subscribe, to the Fund.

(2) The contribution shall be such percentage of the subscriber's emoluments drawn on duty during the year or period as the case may be, as has been or may be prescribed by general or special order under the Contributory Provident Fund Rules (India), 1962 :

Provided that, if, through oversight or otherwise the amount subscribed is less than the minimum subscription payable by the subscriber under sub-rule (1) of rule 8 and if the short subscription together with the interest accrued thereon is not paid by the subscriber within such time as may be specified by the authority competent to sanction an advance for the grant of which special reasons are required under sub-rule (3) of rule 12, the contribution payable by the Board shall be equal to the amount actually paid by the subscriber or the amount normally payable by the Board, whichever is less, unless the Board in any particular case otherwise directs.

(3) Where a subscriber elects to subscribe during leave, his leave salary shall, for the purposes of this rule, be deemed to be emoluments drawn on duty.

(4) Where a subscriber elects to pay arrears of subscriptions in respect of a period of suspension, the emoluments or portion of emoluments which may be allowed for that period on reinstatement shall, for the purpose of this rule, be deemed to be emoluments drawn on duty.

(5) The amount of contribution payable shall be rounded to the nearest whole rupee (fifty paise counting as the next higher rupee).

(11) Interest : (1) The Board shall pay to the credit of the account of a subscriber interest, at such rate as the Central Government may from time to time prescribe for the payment of interest on subscriptions to the General Provident Fund maintained for Government servants, on the amount at his credit in the Fund.

(2) The Board shall contribute the difference, if any, between the total amount of interest actually realised on investments made from the accumulations made in the Fund during the financial year and the total amount of interest payment to all subscribers in respect of the same year.

(3) Interest shall be credited with effect from the 31st March of each year in the following manner :—

(i) on the amount to the credit of a subscriber on 31st March of the preceding year less any sums withdrawn during the current year-interest for twelve months ;

(ii) on sums withdrawn during the current year-interest from the 1st April of the current year upto the last day of month preceding the month of withdrawal ;

(iii) on all sums credited to the subscriber's account after the 31st March of the preceding year-interest

from the date of deposit upto the 31st March of the current year;

(iv) the total amount of interest shall be rounded to the nearest whole rupee (fifty paise counting as the next higher rupee) :

Provided that when the amount standing to the credit of a subscriber has become payable, interest shall thereupon be credited under this sub-rule in respect only of the period from the beginning of the current year or from the date of deposit as the case may be, upto the date on which the amount standing to the credit of the subscriber becomes payable.

(4) For the purposes of this rule, the date of deposit shall be deemed to be the first day of the month succeeding the month in which the emoluments of a subscriber are drawn or disbursed :

Provided that where the emoluments of a subscriber are not drawn before the expiry of the last day of the month to which it relates and consequently there has been delay in the recovery of his subscription towards the Fund, the interest on such subscription shall be payable from the month in which the pay or leave salary of the subscriber was due irrespective of the month in which it was actually drawn.

(5) The interest shall be payable upto the end of the month preceding that in which payment is made, or upto the end of the sixth month after the month in which such amount became payable whichever of these periods be less, shall be payable to the person to whom such amount is to be paid :

Provided that no interest shall be paid in respect of any period after the date which the Secretary has intimated to that person (or his agent) as the date, on which he is prepared to make payment in cash or if he pays by cheque after the date on which the cheque in that person's favour is sent by post.

(6) Payment of interest on the Fund balances beyond a period of six months, after the amount due to a subscriber became payable, upto a period of one year may be authorised by the Secretary after he has personally satisfied himself that the delay in payment was occasioned by circumstances beyond the control of the subscriber and in every such case the administrative delay involved in the matter shall be fully investigated and action, if any required, taken.

(7) Interest shall not be credited to the account of a subscriber if he informs the Secretary that he does not wish to receive it, but if he subsequently asks for interest it shall be credited with effect from the 1st April of the year in which he asks for it.

(8) The interest on accounts which under rule 17 or rule 18 are replaced at the credit of the subscriber, in the Fund shall be calculated at such rates as is specified in sub-rule (1) and, as far as may be, in the manner prescribed in this rule.

12. Advances from the Funds: (1) The Secretary may sanction the payment to any subscriber of an advance consisting of a sum of whole rupees and not exceeding in amount three months' pay or half the amount of subscriptions and interest thereon standing to the credit of the subscriber in the Fund, whichever is less, for one or more of the following purposes, namely :—

(a) to pay expenses in connection with illness, confinement or a disability (including, where necessary, the travelling expenses) of the subscriber or any person actually dependent on him;

(b) to meet the cost of higher education (including where necessary, the travelling expenses) of the subscriber or any person actually dependent on him in the following cases, namely :—

(i) for education outside India for an academic, technical, professional or vocational courses beyond the High School stage ;

(ii) for any medical, engineering or other technical or specialised course in India beyond the High School stage :

Provided that the course of study is for a period not less than three years;

(c) to pay obligatory expenses on a scale appropriate to the status which by customary usage the subscriber has to incur in connection with marriages, funerals or other ceremonies;

(d) to meet the cost of legal proceedings instituted by the subscriber for vindicating his position in regard to any allegations made against him in respect of any act done by him in the discharge of his official duty, the advance in this case being available in addition to any advance admissible for the same purpose from any other Board source :

Provided that the advance under this clause shall not be admissible to a subscriber who institutes legal proceedings in any court of law either in respect of any matter unconnected with his official duty or against the Board in respect of any condition of service or penalty imposed on him;

(e) to meet the cost of his defence where the subscriber is prosecuted by the Board in any court of law where the subscriber engages a legal practitioner to defend himself in an inquiry in respect of any alleged official misconduct on his part.

(2) The Chairman may, in special circumstances, sanction the payment to any subscriber of an advance if he is satisfied that the subscriber concerned requires the advance for reasons other than those mentioned in sub-rule (1),

(3) An advance shall not, except for special reasons to be recorded in writing, be granted to any subscriber in excess of the limit laid down in sub-rule (1) or until repayment has been made of the last instalment of any previous advance together with interest thereon :

Provided that an advance shall in no case exceed the amount of subscriptions and interest thereon standing to the credit of the subscriber in the Fund.

Explanation 1 : For the purpose of this rule, pay includes dearness pay, where admissible.

Explanation 2 : A subscriber shall be permitted to take an advance once in every six months under clause (b) of sub-rule (1).

13. Recovery of advances : (1) (a) An advance shall be recovered from the subscriber in such number of equal monthly instalments as the Secretary may direct, but such number shall not be less than twelve, unless the subscriber so elects, and more than twenty-four;

(b) in special cases where the amount of advance exceeds three months' pay of the subscriber under sub-rule (3) of rule 12, the Secretary may fix such number of instalments to be more than twenty-four but in no case the number of instalments shall be more than thirty-six.

(c) a subscriber may, at his option, make repayment in a lesser number of instalments than the number of instalments prescribed by these rules.

(d) Each instalment shall be a number of whole rupees, the amount of the advances being raised or reduced, if necessary to admit of the fixation of such instalments.

(2) (a) Recovery of advance shall be made in the manner provided in rule 9 for the realisation of subscription and shall commence with the issue of the pay for the month following the one in which the advance was drawn.

(b) Recovery shall not be made, except with the subscriber's consent while he is in receipt of subsistence grant or is on leave for a period of ten days.

or more in a calendar month which period of leave either does not carry any leave salary or carries leave salary equal to or less than half average pay, as the case may be.

(c) Recovery of advance may be postponed on the subscriber's written request by the Secretary during any period when the recovery of an advance of pay granted to the subscriber, is being made.

(3) (d) If more than one advance has been made to a subscriber from the Fund, each advance shall be treated separately for the purpose of recovery.

(4) (a) After the principal of the advance has been fully repaid, interest shall be paid thereon at the rate of one-fifth per cent of the principal for each month or broken portion of a month during the period between the drawal and complete repayment of the principal.

(b) Interest shall ordinarily be recoverable in one instalment in the month after complete repayment of the principal, but, if the period referred to in clause (a) exceeds twenty months, interest may, if the subscriber so desires, be recovered in two monthly equal instalments and the method of recovery shall be that provided in sub-rule (2).

(5) If an advance has been granted to a subscriber and drawn by him and the advance is subsequently disallowed before repayment is completed, the whole or balance of the amount withdrawn, shall forthwith be repaid with interest at the rate specified in rule 11 by the subscriber, to the Fund and where the subscriber makes default in making the repayment the amount withdrawn and interest shall be ordered by the Secretary to be recovered by deduction from the emoluments of the subscriber in a lump sum, or in monthly instalments not exceeding twelve as may be directed by the Secretary.

(6) The recoveries made under this rule shall be credited as they are made, to the account of the subscriber in the Fund.

(7) Notwithstanding anything contained in these rules, in the sanctioning authority is satisfied that money drawn as an advance from the Fund under rule 12 has been utilised for a purpose other than that for which sanction was given to the drawal of the money, the amount in question shall forthwith be repaid by the subscriber to the Fund, or in default, be ordered to be recovered by deduction in one lump sum from the emoluments of the subscriber even if he be on leave :

Provided that if the total amount to be repaid be more than half the subscriber's monthly emoluments, recoveries shall be made in monthly instalments of moieties of his emoluments till the entire amount is repaid by the subscriber.

**Explanation.**—The term "emoluments" in this rule does not include subsistence grant.

14. Withdrawal from the Fund.—Subject to the conditions specified herein, withdrawals may be sanctioned by the Secretary, at any time after the completion of twenty years of service including broken periods of service, if any, of a subscriber or within ten years before the date of his retirement on superannuation, whichever is earlier, from the amount of subscriptions and interest thereon standing to the credit of the subscriber in the Fund, for one or more of the following purposes, namely :—

(a) for meeting the cost of higher education (including, where necessary, the travelling expenses) of any child of the subscriber actually dependent on him in the following cases, namely :—

(i) for education outside India for academic technical or specialised course beyond the High School stage;

(ii) for any medical, engineering or other technical or specialised course in India beyond the High School stage;

Provided that the course of study is for a period not less than three years;

(b) for meeting the expenditure in connection with the marriage of the subscriber's sons or daughters and any other female relation actually dependent on him;

(c) for meeting the expenses in connection with the illness (including, where necessary, the travelling expenses) of the subscriber or any person actually dependent on him;

(d) for building or acquiring a suitable house for his residence including the cost of the site or repaying any outstanding amount on account of loan expressly taken for this purpose or reconstructing or making additions or alterations to a house already owned or acquired by a subscriber;

(e) for purchasing a house site or repaying any outstanding amount on account of loan expressly taken for this purpose;

(f) for constructing a house on a site purchased utilising the sum withdrawn under clause (e);

(g) for acquiring a farm land or business premises or both within six months before the date of the subscriber's retirement.

**Explanation.**—A subscriber who has availed himself of an advance under the scheme sponsored by the Central Government for grant of advances for house building purposes or has been allowed any assistance in this regard from any other Government source shall be eligible for the grant of final withdrawal under clauses (d), (e) and (f) for the purposes specified therein and also for the purpose of repayment of any loan taken under the aforesaid scheme subject to the limit specified in the provisos to sub-rule (1) of rule 15.

15. Condition for withdrawal.—(1) (a) Any sum withdrawn by a subscriber at any one time for one or more of the purposes specified in rule 14 from the amount standing to his credit in the Fund shall not ordinarily exceed one half of the amount of subscription and interest thereon standing to the credit, of the subscriber in the Fund or six months' pay, whichever is less.

(b) The Secretary may, however, sanction the withdrawal of an amount in excess of this limit upto threefourths of the amount of subscriptions and interest thereon standing to the credit of the subscriber in the Fund having due regard to

(i) the status of the subscriber;

(ii) the object for which the withdrawal is being made;

(iii) the amount of subscriptions and interest thereon standing to the credit of the subscriber in the Fund :

Provided that in no case the maximum amount of withdrawal shall exceed Rs. 1,25,000 or 75 times the monthly pay, whichever is less :

Provided further that in the case of a subscriber who has availed himself of an advance under the scheme sponsored by the Central Government for the grant of advances for house-building purpose, or has been allowed any assistance in this regard from any other Government source, the sum withdrawn under this sub-rule together with the amount of advance taken under the aforesaid scheme or the assistance taken from any other Government source shall not exceed Rs. 1,25,000 or 75 times the monthly pay, whichever is less.

**Explanation 1.**—A subscriber shall be permitted to take a withdrawal once in every six months under clause (a) of rule 14 and every such withdrawal shall be treated as a withdrawal for a separate purpose for the purposes of rule 14.

**Explanation 2.**—In cases where a subscriber has to pay in instalments for a site or a house purchased, or a house constructed through a House-Building Co-operative Society or similar agency, he shall be permitted to make a withdrawal as and when he is called upon to make a payment of any instalment and every such payment shall be treated as a payment for a separate purpose for the purposes of rule 14.

(2) A subscriber who has been permitted to withdraw money from the Fund under rule 14 shall satisfy the Secretary that the money has been utilised for the purpose for which it was withdrawn, and if he fails to do so, the whole of the sum so withdrawn, or so much thereof as has not been applied for the purposes for which it was withdrawn, shall forthwith be repaid by the subscriber in one lump sum together with interest thereon at the rate specified in rule 11 by the subscriber to the Fund, and where the subscriber makes default in making the payment, the amount withdrawn and interest shall be ordered by the Secretary to be recovered by deduction from the emoluments of the subscriber either in a lump sum, or in such monthly instalments as may be directed by the Secretary.

(3) (a) A subscriber who has been permitted under clause (d) or clause (e) or clause (f) of sub-rule (1) of rule 14 to withdraw money from the amount of subscription together with interest thereon standing to his credit in the Fund, shall not part with the possession of the house built or acquired or house-site purchased with the money so withdrawn, whether by way of sale, mortgage (other than mortgage to the Secretary), gift, exchange or otherwise without the previous permission of the Secretary :

Provided that such permission shall not be necessary for—

- (i) the house or house-site being leased for any term not exceeding three years, or
- (ii) its being mortgaged in favour of a Housing Board, nationalised bank or the Life Insurance Corporation or any other Corporation owned or controlled by the Central Government which advances loans for the construction of a new house or for making additions or alterations to an existing house.

(b) The subscriber shall submit a declaration not later than the 31st day of December of every year as to whether the house or the house-site, as the case may be, continues to be in his possession or has been mortgaged or otherwise transferred or let out as aforesaid and shall, if so required, produce before the Secretary on or before the date specified by the Secretary in that behalf, the original sale, mortgage or lease deed and also the documents on which his title to the property is based.

(c) If at any time before his retirement, the subscriber parts with the possession of the house or house-site without obtaining the previous permission of the Secretary, he shall forthwith repay the sum so withdrawn by him from the Fund in a lump sum to the Fund, and, in default of such repayment, the Secretary shall, after giving the subscriber a reasonable opportunity of making a representation in the matter, cause the said sum to be recovered from the emoluments of the subscriber either in a lump sum or in such number of monthly instalments, as may be determined by the Secretary.

**Explanation.—**A subscriber who has taken loan from Government and in lieu thereof has mortgaged the house or house-site to the Government shall be required to furnish a declaration to the following effect, namely :—

"I do hereby certify that the house or house-site for the construction of which or for the acquisition of which I have taken a final withdrawal from the Provident Fund continues to be in my possession but stands mortgaged to Government."

**16. Conversion of an advance into withdrawal.**—(1) A subscriber who has already drawn or may draw in future an advance under rule 12 for any of the purposes specified in clauses (a), (b) or (c) of sub-rule (1) of that rule, may convert by written request addressed to the Secretary, the balance outstanding against him in relation to that advance, into a final withdrawal if the purpose for which the advance was sanctioned in a purpose for which the withdrawal can be made under rule 14 and the advance satisfies the other conditions specified in rules 14 and 15.

75GT/78--2

(2) For the purposes of this rule in calculating the amount that may be allowed to be withdrawn by a subscriber under sub-rule (1) of rule 15, the amount of subscription with interest thereon standing to the credit of the subscriber in the account at the time of conversion plus the outstanding amount of advance shall be taken as the balance of subscription and interest lying to his credit in his account and each withdrawal shall be treated as a separate one and the same principle shall apply in the event of more than one conversion.

**17. Final withdrawals of accumulations in the Fund.**—When a subscriber quits the service, the amount outstanding to his credit in the Fund shall, subject to any deduction under rule 20, become payable to him :

Provided that a subscriber, who has been dismissed from the service and is subsequently reinstated in the service shall, if required to do so by the Board repay any amount paid to him from the Fund in pursuance of this rule, with interest thereon at the rate specified in rule 11, in the manner provided in the proviso to rule 18. The amount so repaid shall be credited to his account in the Fund, the part which represents his subscriptions and interest thereon, and the part which represents the Board's contribution with interest thereon being accounted for in the manner provided in rule 6.

**Explanation 1.—**A subscriber who is granted leave shall be deemed to have quit the service from the date of compulsory retirement or on the expiry of an extension of service.

**Explanation 2.—**A subscriber other than the one who is appointed on contract or one who has retired from service and is subsequently re-employed, with or without a break in service, shall not be deemed to quit the service, when he is transferred without any break in service to a new post under a State Government or in another department of the Central Government (in which he is governed by another set of Provident Fund Rules) and without retaining any connection with his former post. In such a case, his subscription and the Board's contribution together with interest thereon shall not be transferred—

(a) to his account in the other Fund in accordance with the rules of the Fund, if the new post is in another department of the Central Government; or

(b) to a new account under the State Government concerned if the new post is under a State Government and the State Government consents, by general or special order, to such transfer of his subscriptions, the Board's contribution and interest.

**Explanation 3.—**Transfer should be held to include cases of resignations from service in order to take up appointment in another department of the Central Government or under the State Government without any break and with proper permission of the Board. In cases, where there has been break in service, it shall be limited to the joining time allowed on transfer to a different station. The same shall hold good in cases of retrenchments followed by immediate employment whether under the same or different Government.

**Explanation 4.—**(a) When a subscriber other than the one who is appointed on contract or one who has retired from service and is subsequently re-employed, is transferred without any break, to the service under another body corporate, owned or controlled by Government or an autonomous organisation, registered under the Societies Registration Act, 1860 (21 of 1860), the amount of subscriptions and the Board's contribution together with interest thereon shall not be paid to him but shall be transferred with the consent of that body, to his new Provident Fund Account under that body.

(b) Transfers shall include cases of resignation from service in order to take up appointment under another body corporate, owned or controlled by Government or an autonomous organisation, registered under the Societies Registration Act, 1860 (21 of 1860), without any break and with proper permission of the Board. The time taken to join the new post shall not be treated as a break in service

if it does not exceed the joining time admissible under Government rules on transfer from one post to another.

18. Retirement of subscriber.—When a subscriber—

- (a) has proceeded on leave preparatory to retirement ; or
- (b) while on leave, has been permitted to retire or declared by competent medical authority to be unfit for further service,

the amount of subscriptions and interest thereon standing to his credit in the Fund shall, upon application made by him in that behalf to the Secretary become payable to the subscriber :

Provided that the subscriber, if he returns to duty, shall if required to do so by the Secretary repay to the Fund, for credit to his account, the whole or part of any amount paid to him from the Fund in pursuance of this rule, with interest thereon at the rate provided in rule 11 in cash or securities, or partly in cash and partly in securities, by instalments or otherwise by recovery from his emoluments or otherwise, as the Secretary may direct.

19. Procedure on death of subscriber.—Subject to any deduction under rule 20, on the death of a subscriber before the amount standing to his credit has become payable or where the amount has become payable, before payment has been made.

(i) when the subscriber leaves a family,—

- (a) if a nomination made by the subscriber in accordance with the provisions of rule 5 in favour of a member or members of his family subsists, the amount standing to his credit in the Fund or the part thereof to which the nomination relates, shall become payable to his nominee or nominees in the proportion specified in the nomination ;
- (b) if no such nomination in favour of a member or members of the family of the subscriber subsists or if such nomination relates only to a part of the amount standing to his credit in the Fund, the whole amount or the part thereof to which the nomination does not relate, as the case may be, shall, notwithstanding any nomination purporting to be in favour of any person or persons other than a member or members of his family become payable to the members of his family in equal shares :

Provided that no share shall be payable to—

- (i) sons who have attained majority ;
- (ii) sons of a deceased son who have attained majority;
- (iii) married daughters whose husbands are alive ;
- (iv) married daughters of a deceased son whose husbands are alive.

If there is any member of the family other than those specified in clauses (i), (ii), (iii) and (iv) :

Provided further that the widow or widows and the child or children of a deceased son shall receive between them in equal parts only the share which that son would have received if he has survived the subscriber and had been exempted from the provisions of clause (i) of the first proviso.

Note : (i) Any sums payable under these rules to a member of the family of a subscriber vests in such member under sub-section (2) of section 3 of the Provident Funds Act, 1925 (19 of 1925).

- (ii) When the subscriber leaves no family, if a nomination made by him in accordance with the provisions of rule 5 in favour of any person or persons subsists, the amount standing to his credit in the Fund or the part thereof to which the nomination relates, shall become payable to his nominee or nominees in the proportion specified in the nomination.

Explanation 1.—When a nominee is a dependent of the subscriber as defined in clause (c) of section 2 of the Pro-

vident Funds Act, 1925 (19 of 1925), the amount vests in such nominee under sub-section (2) of section 3 of that Act.

Explanation 2.—When the subscriber leaves no family and no nomination made by him in accordance with the provisions of rule 5 subsists, or if such nomination relates only to part of the amount standing to his credit in the Fund, the relevant provisions of clause (b) and of sub-clause (ii) of clause (c) of sub-section (1) of section 4 of the Provident Funds Act, 1925 (19 of 1925) are applicable to the whole amount or the part thereof to which the nomination does not relate.

20. Deductions.—Subject to the condition that no deduction may be made which reduce the credit by more than the amount of any contribution by the Board with interest thereon credited under rules 1 and 11, before the amount standing to the credit of the subscriber in the Fund, is paid out of the Fund,—

(A) The Secretary may direct the deduction therefrom and payment to the Board of—

- (i) all amounts representing such contribution and interest, if the subscriber is dismissed from service due to misconduct, insolvency or inefficiency :

Provided that where the Secretary is satisfied that such deduction would cause exceptional hardship to the subscriber he may, by order, exempt from such deduction an amount not exceeding two-third of the amount of such contribution and interest which would have been payable to the subscriber if he had retired on medical grounds :

Provided further that if any such order of dismissal is subsequently cancelled, the amount so deducted shall, on his reinstatement in the service be replaced to his credit in the Fund :—

- (ii) all amounts representing such contribution and interest if the subscriber within five years of the commencement of his service as such, resigns from the service or ceases to be an employee under the Board otherwise than by reason of death, superannuation, or a declaration by a competent medical authority that he is unfit for further service, or the abolition of the post or the reduction of establishment ;

(B) the Secretary may direct the deduction therefrom and payment to the Board of any amount due under a liability incurred by a subscriber to Board.

Explanation.—For the purpose of sub-clause (ii) of clause (A) of this rule—

- (a) the period of five years shall be reckoned from the commencement of the subscriber's continuous service under the Board.
- (b) resignation from service in order to take up appointment in another department of the Central Government or under the State Government or under a body corporate owned or controlled by Government or an autonomous organisation, registered under the Societies Registration Act, 1860 (21 of 1860) without any break and with proper permission of the Board shall not be treated as resignation from service under the Board.

21. Manner of payment or amount in the fund.—(1) When the amount standing to the credit of a subscriber in the Fund, or the balance thereof after any deduction under rule 20, becomes payable it shall be the duty of the Secretary, after satisfying himself, when no such deduction has been directed under that rule that no deduction is to be made to make payment on receipt of a written application in this behalf as provided in sub-rule (3).

(2) If the person to whom, under these rules, any amount is to be paid, is lunatic for whose estate a manager has been appointed in this behalf under the Indian Lunacy Act, 1912 (4 of 1912), the payment shall be made to such manager and not to the lunatic :

Provided that where no manager has been appointed and the person to whom the sum is payable is certified by a Magistrate to be a lunatic, the payment shall, under the

orders of the Collector, be made in terms of sub-section (1) of section 95 of the Indian Lunacy Act, 1912 (4 of 1912), to the person having charge of such lunatic and the Secretary shall pay only the amount which he thinks fit to the person having charge of the lunatic and the surplus, if any, or such part thereof, as he thinks fit, shall be paid for the maintenance of such members to the lunatic's family as are dependent on him for maintenance.

(3) (a) Any person who desires to claim payment under this rule shall send a written application in that behalf to the Secretary ;  
 (b) payment of amounts withdrawn shall be made in India only ;  
 (c) the persons to whom the amounts are payable shall make their own arrangements to receive payments in India.

**Explanation.**—When the amount standing to the credit of a subscriber has become payable under rules, 17, 18, or 19, the Secretary shall authorise prompt payment of that portion of the amount standing to the credit of a subscriber in regard to which there is no dispute or doubt, the balance being adjusted as soon after as may be.

22. Number of Account to be quoted at the time of payment of subscription.—When paying a subscription either by deduction from emoluments or in cash, a subscriber shall quote the number of his account in the Fund, which shall be communicated to him by the Secretary and any change in the number shall similarly be communicated to the subscriber by the Secretary.

23. Annual statement of Account to be supplied to the subscriber.—(1) (a) As soon as possible after the 31st March of each year, the Chief Accounts Officer shall send to each subscriber a statement of his account in the Fund showing the opening balance as on 1st April of the year, the total

amount credited or debited during the year, the total amount of interest credited as on the 31st March of the year and the closing balance on that date.

(b) the Chief Accounts Officer shall attach to the statement of account on enquiry whether the subscriber :—

(i) desire to make any alteration in any nomination made under rule 5 ;  
 (ii) has acquired a family in a case where the subscriber has made no nomination in favour of a member of his family under the first proviso to sub-rule (1) of rule 5.

(2) A subscriber shall satisfy himself as to the correctness of the annual statement and errors shall be brought to the notice of the Chief Accounts Officer within three months from the date of receipt of the statement.

(3) The Chief Accounts Officer shall, if required by a subscriber, once but not more than once in a year, inform the subscriber of the total amount standing to his credit in the Fund at the end of the last month for which his account has been written up.

24. Application to be addressed to the Secretary.—All applications under these rules shall be addressed to the Secretary.

25. Relaxation of the provisions of the rules in individual cases.—When the Board is satisfied that the operation of any of these rules causes or is likely to cause undue hardship to a subscriber, the Board may, notwithstanding anything contained in these rules, deal with the case of such subscriber in such manner as may appear to Board to be just and equitable.

26. Interpretation.—If any question arises relating to the interpretation of these rules, it shall be referred to the Central Government for its decision, who shall decide the same.

## FIRST SCHEDULE

[See rule 5(3)]

### FORMS OF NOMINATION

#### I. When the subscriber has a family and wishes to nominate one member thereof.

I hereby nominate the person mentioned below, who is a member of my family as defined in rule 2 of the Oil Industry Development Board (Employees, Contributory Provident Fund) Rules, 1978, to receive the amount that may stand to my credit in the Fund, in the event of my death before that amount has become payable, or having become payable has not been paid :—

Name and address of nominee	Relationship with subscriber	Age	Contingencies on the happening of which the nomination shall become invalid	Name, address and relationship of the person/persons if any, to whom the right of the nominee shall pass in the event of his predeceasing the subscriber

Dated the ..... day of 197

Signature of subscriber

Two witnesses to signature.

1.  
2.

#### II. When the subscriber has a family and wishes to nominate more than one member thereof.

I hereby nominate the persons mentioned below, who are members of my family as defined in rule 2 of the Oil Industry Development Board (Employees, Contributory Provident Fund) Rules, 1978 to receive the amount that may stand to my credit in the Fund, in the event

of my death before that amount has become payable, or having become payable has not been paid and direct that the said amount shall be distributed among the said persons in the manner shown below against their names :—

Name and address of nominee	Relationship with subscriber	Age	Amount of share of accumulations to be paid to each	Contingencies on the happening of which the nomination shall become invalid	Name, address and relationship of the person/persons, if any, to whom the right of the nominee shall pass in the event of his predeceasing the subscriber
-----------------------------	------------------------------	-----	---	---	---

Dated this day of 197  
at.....

Signature of subscriber

Two witnesses to signature

- 1.
- 2.

III. When the subscriber has no family and wishes to nominate one person.

I, having no family as defined in rule 2 of the Oil Industry Development Board (Employees' Contributory Provident Fund) Rules, 1978 hereby nominate the person mentioned below to receive the amount that may stand to my credit in the Fund in the event of my death before that amount has become payable or having become payable has not been paid :—

Name and address of nominee	Relationship with subscriber	Age	Contingencies on the happening of which the nomination shall become invalid	Name, address and relationship of the person/persons, if any, to whom the right of the nominee shall pass in the event of his predeceasing the subscriber
-----------------------------	------------------------------	-----	---	---

Dated this day of 197  
at.....

Signature of subscriber

Two witnesses to signature

- 1.
- 2.

IV. When the subscriber has no family and wishes to nominate more than one person.

I, having no family as defined in rule 2 of the Oil Industry Development Board (Employees' Contributory Provident Fund) Rules, 1978, hereby nominate the persons mentioned below to receive the amount that stand to my credit in the Fund, in the event of my death before that amount has become payable, or having become payable has not been paid, and direct that the said amount shall be distributed among the said persons in the manner shown below against their names :—

Name and address of nominee	Relationship with subscriber	Age	Amount of share of accumulations to be paid to each	Contingencies on the happening of which the nomination shall become invalid	Name, address and relationship of the person/persons, if any, to whom the right of the nominee shall pass in the event of his predeceasing the subscriber
-----------------------------	------------------------------	-----	---	---	---

Dated this day of 197  
at.....

Signature of subscriber

Two witnesses to signature

- 1.
- 2.

[File No 7(13)/78-PED]  
S L KHOSLA, Jt. Secy. Financial Advisor